



رسول और नबी

अनुक्रमणिका

رسول और नबी

क्या मानवता को रसूलों की
आवश्यकता है ?

नबूव्वत व रिसालत (ईशदूतत्व)
की सत्यता

ईश दूतत्व के सबूत

रसूलों के संदेश के मुख्य नियम
धैर्यवान रसूलों के इतिहास के
कुछ भाग

रसूल और नबी

क्या मानवता को रसूलों की आवश्यकता है ?

ईश्वर ने मानव की सृष्टि श्रेष्ठ वृत्ति के आधार पर किया है, सही और गलत के बीच अंतर करने के लिए मानव में बुद्धि पैदा कर दी। जब मानवीय बुद्धि विफलता, असमर्थता, हवस और स्वार्थी का, बल्कि विरोधाभासी और इच्छेलाफ का शिकार होती है, परन्तु कुछ लोग किसी बात को अच्छा समझते हैं, उसी बात को दूसरे लोग बुरा समझते हैं, बल्कि एक ही मानव समय और स्थान के बदलने पर अपनी सोंच बदल देता है, तो जब मानवीय बुद्धि गुप्त घटनाओं अज्ञान बातों के ज्ञान और मानव के अंदर छिपी हुई चोजों के एहसास से शक्तिहीन है, तो यह प्रजापति ईश्वर, उसका लक्ष्य, उसके करने या ना करने के आदेश के ज्ञान से बहुत ही ज्यादा शक्तिहीन होगी, और यह बात तो दूर की है कि कोई मानव सीधे ईश्वर (अल्लाह) से मिले। ईश्वर ने कहा और किसी आदमी के लिए मुम्किन नहीं कि खुदा उस से बात करे, मगर इल्हाम (के ज़रिए) से या पर्दे से या कोई फ़रिश्ता भेज दे, तो वह खुदा के हुक्म से जो खुदा चाहे इल्का करे। बेशक वह बुलंद मर्तबा (और) हिक्मत वाला है। (अल-शुअरा, 51)

इसी कारण ईश्वर ने अपनी अपनी प्राणियों में से पवित्र लोगों को अपना रसूल और नबी बना दिया, ताकि यह पवित्र लोग ईश्वर और उसके भक्तों के बीच सर्वश्रेष्ठ राजदूत का काम करें। ईश्वर ने कहा खुदा फ़रिश्तों में से पैग़ाम पहुंचाने वाले चुन लेता है और इन्सानों में से भी, बेशक खुदा सुनने वाला (और) देखने वाला है। (अल हज, 75)

जो मानवता को अपने ईश्वर के पथ की ओर निर्देश करें, और उन्हें अंधकारी

सरलता अपनाओ

मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी महिमा की ऊँचाई में भी अपने जीवन को सरलता बनाथे रखा, इसी कारण जब आप किसी के पास पहुँचते तो आपको यह पसंद नहीं था कि लोग खड़े हों या आप के स्वागत में अतिशयोक्ति करें

वाशिंगटन एरफ़ेग

अमेरिकन डिप्लोमेट और लेखक



से निकाल कर प्रकाशवान की ओर लायें, और फिर रसूलों के आजाने के बाद मानवता के पास ईश्वर के खिलाफ कोई सबूत न रहे। ईश्वर ने कहा (सब) पैग़म्बरों को (खुदाने) खुशखबरी सुनाने वाले और डराने वाले (बना कर भेजा था), ताकि पैग़म्बरों के आने के बाद लोगों को खुदा पर इल्ज़ाम का मौक़ा न रहे और खुदा ग़ालिब हिक्मत वाला है। (अल-निसा, 165)

परन्तु मानव ही में से कुछ को रसूल बनाकर भेजना ईश्वर का मानवता पर बहुत बड़ा अनुग्रह है, ताकि यह रसूल उनको फ़ायदे की बातें बतायें और पवित्र बनायें। ईश्वर ने कहा खुदा ने मोमिनों पर बड़ा एहसान किया है कि उन में उन्हीं में से एक पैग़म्बर भेजे, जो उन को खुदा की आयतें पढ़-पढ़ कर सुनाते और उन को पाक करने और (खुदा की) किताब और दानाई सिखाते हैं और पहले तो ये लोग खुली गुमराही में थे। (आले इमान, 164)

अवश्य रूप से ईश्वर का यह बहुत बड़ा अनुग्रह है कि उसने मानवता के लिए अपना रसूल भेजा, और यह भी अनुग्रह है कि वह रसूल उन्हीं में से है। ईश्वर की ओर से आनेवाले रसूलों का यह अनुग्रह इस रूप में व्यक्त होता है कि वे ईश्वर की पवित्र वाणी मानवता के सामने रखते हैं, ताकि वे उन्हें ईश्वर की महत्वकांक्षा और उसके गुण बतायें, उन्हें देवत्व की सत्यता और विशेषता का वर्णन करें, फिर इसके बाद मानव को स्वयं अपने व्यक्तित्व, जीवन और संचलन के बारे में निर्देश करें। ये रसूल मानव को उस मार्ग की ओर बुलाते हैं जो उसको जीवित रखता है, उस राह की ओर निर्देश करते हैं, जिससे उसके मन और स्थिति में सुधार पैदा हो जाती है। ये रसूल उस स्वर्ग की ओर मानव को बुलाते हैं जिसकी चौड़ाई आकाश और पृथ्वी के समान है। यह सब इस अनुग्रह और उपहार के द्वारा मिलने वाला बहुत बड़ा सदाचार ही तो है। बल्कि ये रसूल मानवता को पवित्र बनाते हैं, उनके दर्जे बुलंद करते हैं। उनके मन, धारणा और भावनाओं को पवित्र बनाते हैं। उनके घर, मान मर्यादा और उनकी प्रार्थनाओं को पवित्र बनाते हैं। उनके जीवन, समाज और उनके

प्रणाली को पवित्र बनाते हैं। और उन्हें मूर्ति पूजा, मिथक, किवंदंती और ईश्वर के साथ किसी को भागीदार मानने के सिद्धांत से पवित्र बनाते हैं। उनके जीवन में प्रोत्साहक ऐसे संस्कार, समारोह, आदतें और परंपरा से उन्हें पवित्र बनाते हैं जो स्वयं मानव और मानवता के हक में एक अपमान है। मानवता को नीच जीवन और जीवन को गंदा करने वाले संस्कार, परंपरा, चरित्र और अवधारणाओं से पवित्र बनाते हैं। अवश्य रूप से नीचता नीचता ही है, और हर नीचता अपने आप में अपवित्र और गंदी है, उसके लिए समय या स्थान की कोई आवश्यकता नहीं है। परन्तु जहाँ कहीं मानवीय मन देवत्व सिद्धांत से रिक्त होगा, तो उस मन पर धारणाएँ अपना शासन चलायेंगी। जहाँ कहीं देवत्व सिद्धांत से मिलने वाले धर्म से मन रिक्त होंगे, (जो उनके जीवन को नियमित करे) तो जीवन नीचता की अवश्य रूप से एक शकल ही होगा। परन्तु नीचता (चाहे वह प्राचीन हो या आधुनिक) से मानवता को सुरक्षित रखने की आवश्यकता है, क्योंकि नीचता चाहे प्राचीन हो या आधुनिक अपने अंदर प्राचीन नीचता की सारी चारित्रिक और सामाजिक दुर्गुण रखती है, और इसी प्रकार से मानवीय जीवन के लक्ष्य का उदाहरण करती है, हालांकि भौतिक विज्ञान, औद्योगिक उत्पादन और संस्कृतिक विकास की अनगिनत सफलताएँ हुई हैं। और इससे पहले तो ये लोग खुली गुमराही में थे। (अल-जुमुअह, 2)

सिद्धांत और धारणाओं की गुमराही, जीवन के उदाहरणों की गुमराही, लक्ष्य और दिशा की गुमराही आदत व व्यवहार की गुमराही, प्रणाली, स्थिति की गुमराही, चरित्र और समाज की गुमराही...

मानव के रूप में ऐसे दानव जिन के लिए धर्म रुकावट बनता नहीं

अमेरिका के एक विश्वविद्यालय के सांख्यिकीय अध्ययन और डेविड पार्टन की एक किताब (पुस्तक) अमेरिका नमाज़ पढ़ता है या नहीं में आया है कि 80 प्रतिशत अमेरिका महिलाएँ अपने जीवन में कम से कम एक पर्याय बलात्कार से पीड़ित होती हैं। हर दिन बलात्कार से पीड़ित होनेवाली नव-युवती लड़कियों की संख्या 1900 से अधिक है। इसी कारण 30 प्रतिशत अमेरिकन लड़कियाँ वर्ष की आयु में गर्भपात या गर्भावस्था या नवजात शिशु को जन्म देती हैं। 61 प्रतिशत बलात्कार 18 वर्ष से कम आयु के लड़कियों पर किया जाता है। 29 प्रतिशत बलात्कार 11 वर्ष से कम आयु के बच्चों पर होता है।

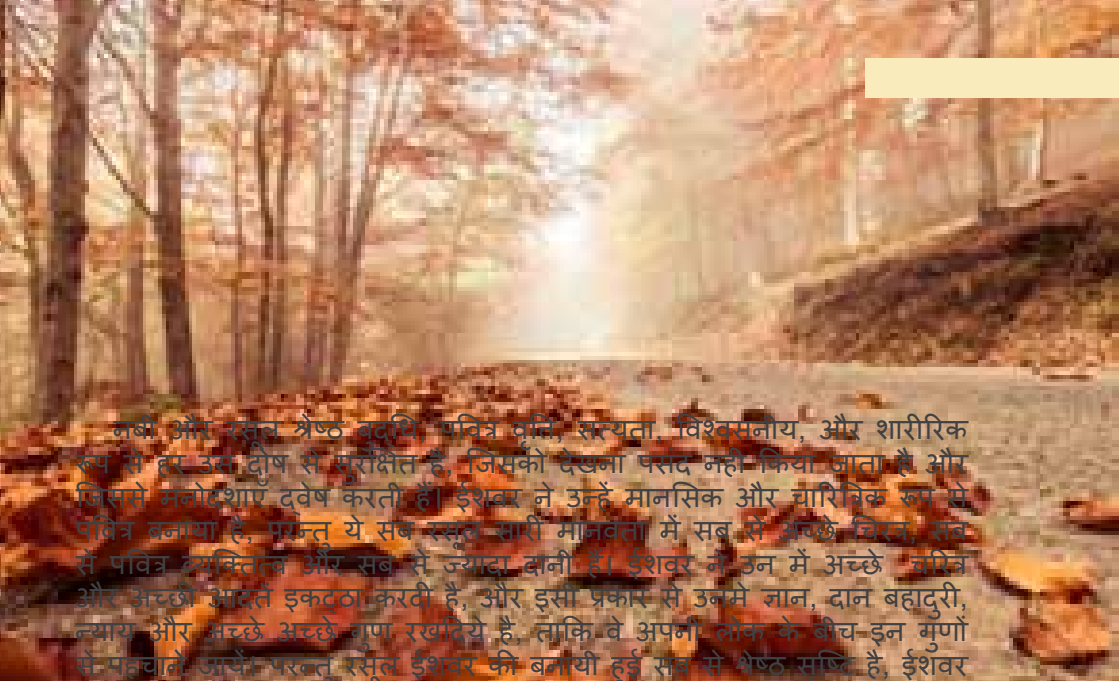
डेविड पार्टन
अमेरिका लेखक



नबूव्वत व रिसालत (ईशदूतत्व) की सत्यता

ईश्वर की यह बुद्धिमत्ता ही है कि उसने हर लोक के पास उनही में से एक मानव को रसूल बनाकर भेजा। ईश्वर ने कहा और हम ने तुम से पहले मर्दों ही को पैगम्बर बनाकर भेजा था। (अल-नहल, 43)

यह भी ईश्वर की बुद्धिमत्ता है कि उसने हर लोक के रसूल को उनही की भाषा जानने वाला बनाकर भेजा, ताकि वे उसकी भाषा और भावनाओं को समझें। ईश्वर ने कहा और हम ने कोई पैगम्बर नहीं भेजा, मगर क्रौम की जुबान बोलता था ताकि उन्हें (खुदा के हुक्म) खोल-खोल कर बता दे, फिर खुदा जिसे चाहता है, गुमराह करता है और जिसे चाहता है, हिदायत देता है और वह ग़ालिब (और) हिकमत वाला है। (इब्राहीम, 4)



नबी और रसूल श्रेष्ठ बलवति, पवित्र वृत्ति, सत्यता, विश्वसनीय, और शारीरिक रूप से हर उस दोष से सुरक्षित हैं, जिसको देखना पसंद नहीं किया जाता है और जिससे मनोदशाएँ दूषित होती हैं। ईश्वर ने उन्हें मानसिक और चारित्रिक रूप से पवित्र बनाया है, परन्तु ये सब रसूल सारी मानवता में सब से अच्छे चिरन, सब से पवित्र व्यक्तित्व और सब से ज्यादा दानी हैं। ईश्वर ने उन में अच्छे चरित्र और अच्छे आदतें इकट्ठा कर दी हैं, और इसी प्रकार से उनसे ज्ञान, दान, बहादुरी, न्याय और अच्छे-अच्छे गुण रखवाये हैं, ताकि वे अपनी लोक के बीच इन गुणों से पचावों। उन्हें परन्तु रसूल ईश्वर की बनायी हुई सब से श्रेष्ठ मुष्टि है, ईश्वर ने उन्हें अपने संदेश को मानवता तक पहुँचाने के लिए चुन लिया है। ईश्वर ने कहा इसको खुदा ही खूब जानता है कि (रिसालत का कौन-सा महल है और) वह अपनी पैगम्बरी किसे इनायत फरमाए (अल्-अन्आम, 124)

और ईश्वर ने कहा खुदा ने आदम और नूह और इब्राहीम के खानदान और इम्रान के खानदान को तमाम दुनिया के लोगों में चुन लिया था। (आले-इम्रान, 33)

और ईश्वर ने ईसा अलैह सलाम के बारे में कहा (वह वक्त भी याद करने के लायक है) जब फरिश्तों ने (मरयम से कहा) कि मरयम, खुदा तुमको अपनी तरफ से एक फ़ैज़ की खुशखबरी देता है, जिसका नाम मसीह (और मशहूर) ईसा बिन मरयम होगा (और जो) दुनिया और आखिरत में बा-आबरू और (खुदा के) खासों में से होगा। और माँ की गोद में और बड़ी उम्र का होकर (दोनों) हालतों में लोगों से (एक ही तरह बातें करेगा और नेकों में होगा)। (आले- इम्रान, 45-46)

निश्चित रूप से मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ईश दूतत्व (रिसालत या पैगम्बरी) के आने से पहले अपने लोक में सत्यवादी और विश्वसनीय के नाम से मशहूर थे, और ईश्वर ने आपके गुण वर्णन करते हुए यह कहा। और तुम्हारे अखलाक बड़े (बुलंद) है। (अल्-खलम, 4)

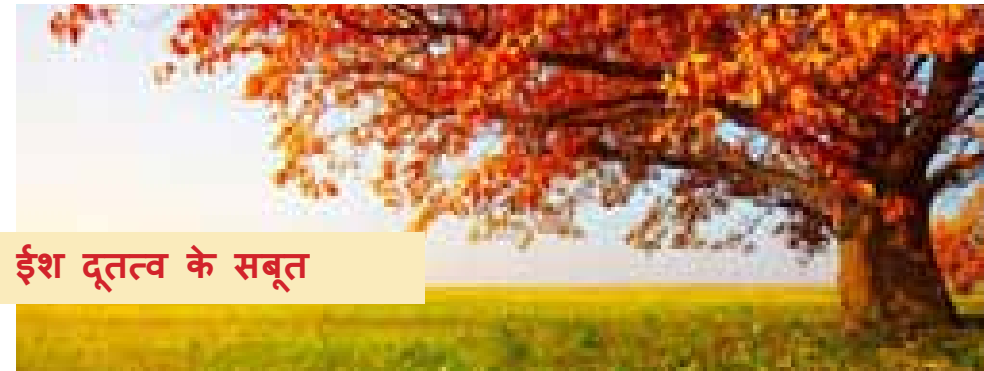
यह सब रसूल और नबी हालांकि अच्छे-अच्छे गुण अपने अन्दर रखते हैं, लेकिन यह भी मानव हैं, इनको भूख लगती है, ये बिमार होते हैं, इनको नींद आती है, ये खाते हैं, शादी ब्याह करते हैं, और इनको मौत भी आती है। ईश्वर ने कहा और (ए मुहम्मद ।) हम ने तुम से पहले भी पैगम्बर भेजे थे और उनको बीवियाँ और औलाद भी दी थी। (अल्-राद, 38)

ईश्वर ने कहा (ए पैगम्बर ।) तुम भी मर जाओगे और ये भी मर जाएँगे । (अल्-जुम, 30)

ईश्वर ने अपने नबी और रसूल मुहम्मद के बारे में यह कहा और तुम अपने दिल में वह बात छिपाते ते जिसको खुदा ज़ाहिर करने वाला था। (अल्-अहज़ाब, 37)

इसी कारण कभी-कभी रसूलों को परेशान किया गया, या उनकी हत्या की गयी, या उन्हें अपने देश से बहिष्कार किया गया। ईश्वर ने कहा और (ए मुहम्मद । उस वक्त को याद करो) जब काफिर लोक तुम्हारे बारे में चाल चल रहे थे कि तुम को कैद कर दें, या जान से मार डालें ! या (वतन से) निकाल दें तो (इधर से) वे चाल चल रहे थे और (उधर) खुदा चाल चल रहा था और खुदा सब से बेहतर चाल चलने वाला है। (अल्-अनफ़ाल, 30)

लेकिन परिणाम, विजेता और सक्षम इस जीवन और भविष्य जीवन में इनही रसूलों के लिए है।



ईश दूतत्व के सबूत

निश्चित रूप से ईश्वर की ओर से मानवता के पास आने वाले रसूल और नबी के अपने दावे में सच्चे होने का सबूत ज़रूर ईश्वर प्रबंध करेगा, जो इस बात की पुष्टि करते हैं कि वे अल्लाह के रसूल हैं, ताकि मानवता के विरोध में सबूत इकट्ठे हो जायें, और ताकि रसूलों के आज्ञापालन और उनको सच्चा न मानने का कोई बहाना न रहे। ईश्वर ने कहा हमने अपने पैगम्बरों को खुली निशानियाँ दे कर भेजा । (अल् हदीद, 25)

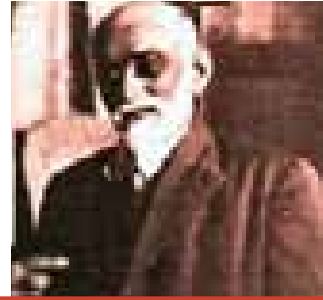
रसूलों की पुष्टि करने वाले सबूत कई हैं, जिनमें से कुछ महत्वपूर्ण निम्न लिखे जा रहे हैं ।

1. ईश्वर ने रसूलों और नबियों को चमत्कारों और निशानियों से समर्थन किया है। ये चमत्कार ईश्वर अपने रसूलों के द्वारा इस रूप में दिखाता है, जो ब्रह्माण्ड के सामान्य विधि से अलग होते हैं, और कोई मानव इस प्रकार के चमत्कार दिखा नहीं सकता है। इन चमत्कारों में से मूसा (अलैहिस्सलाम)

की लकड़ी है जो साँप का रूप चयन कर ली। ईश्वर ने कहा और मूसा यह तुम्हारे दाहिने हाथ में क्या है। उन्होंने कहा यह मेरी लाठी है इस पर मैं सहारा लगाता हूँ और इस से अपनी बकरियों के लिए पत्ते झाड़ता हूँ और इस में मेरे और भी कई फ़ायदे हैं। फ़रमाया कि मूसा। इसे डाल दे। तो उन्होंने उस को डाल दिया और वह यकायक साँप बनकर दौड़ने लगा। खुदा ने फ़रमाया कि उसे पकड़ लो और डरना मत हम उस को अभी उस की पहली हालत पर लौटा देंगे। और अपना हाथ अपनी बगल से लगा लो, वह किसी ऐब (व बिमारी) के बग़ैर सफ़ेद (चमकता-दमकता) निकलेगा। (यह) दूसरी निशानी (है), ताकि हम तुम्हें अपनी बड़ी निशानियाँ दिखाएं। (ताहा, 17-23) ईसा (अलैहिस्सलाम) का चमत्कार यह है कि वह जन्मांध और सफ़ेद दाग वाले को ईश्वर के आदेश से स्वस्थ करदेते थे। ईश्वर ने पवित्र मरयम को ईसा का शुभ संदेश देते समय खुद मरयम की ज़बानी यह कहा मरयम ने कहा, परवर दिगार। मेरे यहाँ बच्चा कैसे होगा कि किसी इन्सान ने मुझे हाथ तक तो लगाया नहीं। फ़रमाया कि खुदा इसी तरह जो चाहता है, पैदा करता है। जब कोई काम करना चाहता है, तो इर्शाद फ़रमा देता है कि होजा, तो वह हो जाता है। और वह उन्हें लिखना (पढना) और दानाई और तौरात और इंजील सिखाएगा। और (ईसा) बनी इस्राईल की तरफ़ पैग़म्बर (होकर जाएँगे और कहेंगे) कि मैं तुम्हारे पास तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से निशानी लेकर आया हूँ वह यह कि तुम्हारे सामने मिट्टी की मूर्ति, परिंदे कि शकल की बनाता हूँ, फिर उसमें फूँक मारता हूँ तो वह खुदा के हुक्म से (सचमुच) जानवर हो जाता है।

और अबरस (सफ़ेद दागी) को तंदुरुस्त कर देता हूँ और खुदा के हुक्म से मुर्दे में जान डाल देता हूँ। और जो कुछ तुम खाकर आते हो और जो कुछ अपने घरों में जमा कर रखते हो, सब तुम को बता देता हूँ। अगर तुम ईमान वाले हो, तो इन बातों में तुम्हारे लिए (खुदा की खुदरत कि) निशानी है। और मुझ से पहले जो तौरात (नाज़िल हुई) थी, उसकी तस्दीक़ भी करता हूँ और (मैं) इसिलए भी (आया हूँ) कि कुछ चीज़ें जो तुमपर हराम थीं, उनको तुम्हारे लिए हलाल कर दूँ और मैं तो तुम्हारे परवरदिगार कि तरफ़ से निशानी लेकर आया हूँ, तो खुदा से डरो और मेरा कहा मानो। कुछ शक नहीं कि खुदा ही मेरा और तुम्हारा परवरदिगार है, तो उसी कि इबादत करो। यही सीधा रास्ता है। (अले-इमान, 47-51) मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का सब से बड़ा चमत्कार पवित्र खुरआन है, हालांकि आप निरक्षर हैं, न आप पढना जानते थे और न लिखना। ईश्वर ने कहा कह दो कि अगर इन्सान और जिन्न इस बात पर जमा हों कि इस खुरआन जैसा बना लाएँ तो इस जैसा न ला सकें, अगरचे वे एक दूसरे के मददगार हो। और हम ने इस खुरआन में सब बातें तरह-तरह से बयान कर दी हैं, मगर अक्सर लोगों ने इन्कार करने के सिवा खुबूल न किया। (अल्-इसा, 88, 89)

इसके अलावा नबी और रसूलों के बहुत से चमत्कार हैं। ईश्वर कि ओर से नबी और रसूलों को प्राप्त इन चमत्कारों के प्रेरणा से हमें यह ज्ञान प्राप्त होता है कि सब चमत्कार तीन भागों में विभाजित होते हैं: ज्ञान, शक्ति और स्वयं आधारित होना। परन्तु पूर्व और आधुनिक काल कि गुप्त बातें बताना, जैसे ईसा (अलैहिस्सलाम) का

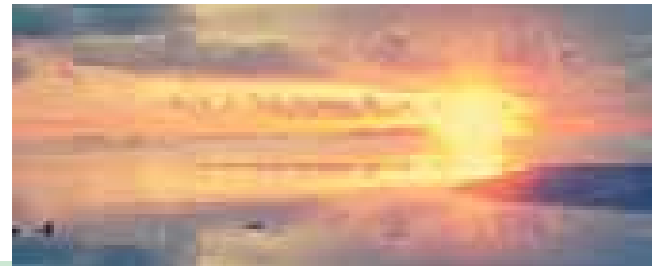


अनन्त चमत्कार

निश्चित रूप से मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूर्व प्रवक्ता के चमत्कार अस्थाथी थे। जब कि हम खुराने करीम को अनन्त चमत्कार का नाम दे सकते हैं। इसलिये कि खुरान का प्रभाव हमेशा, और सदा रहने वाला है। एक मूसलमान के लिए हर वख्त और जगह यह अनुकूल है कि वह केवल खुरान को पढ़कर इस चमत्कार को देखें। इस चमत्कार में हमे इस्लाम के फैलाव का सही कारण मिलता है। यह ऐसा फैलाव है जिसका कारण यूरोपियन नहीं जान सके इसलिए कि वह लोग खुरान से सुपरिचित नहीं हैं, या इसलिए कि वह लोग खुरान को केवल उस अनुवाद से जानते हैं जो वास्तविकता से दूर हैं, इसके अलावा यह अनुवाद शत प्रतिशत सही नहीं होते।

इथेन दिनेह

फ़ेंच चित्रकार और विचारक



अपने लोक को उनके घरों में इकट्ठा की हुई पूंजी और उन्होंने जो खाया उसके बारे में बताना । और हमारे रसूल (मुहम्मद) का पूर्व काल की कई लोक के बारे में, और भविष्य में आनेवाली खियामत की निशानियों और बुराइयों के बारे में बताना । ये सब बातों का संबन्ध ज्ञान से है । लकड़ी का साँप बन जाना, जन्मांध और सफेद दाग वाला स्वस्थ हो जाना, मुर्दे का ज़िन्दा हो जाना और ईश्वर का अपने रसूल मुहम्मद को लोगों से सुरक्षित रखना, शक्ति से संबंधित है, और आप कि हर उस व्यक्ति के विरोध में सहायता करना है, जो आपका बुरा चाहे। ईश्वर ने कहा ऐ पैगम्बर । जो इर्शाद खुदा कि तरफ़ से तुम पर नाज़िल हुए हैं, सब लोगों को पहुँचा दो और अगर ऐसा न किया तो तुम ने खुदा के पैगाम पहुँचाने में कोताही की (यानी पैगम्बरी का फर्ज़ अदा न किया । और खुदा तुम को लोगों से बचाए रखेगा । बेशक खुदा मुन्किरों को हिदायत नहीं देता । (अल्-माइदा, 67)

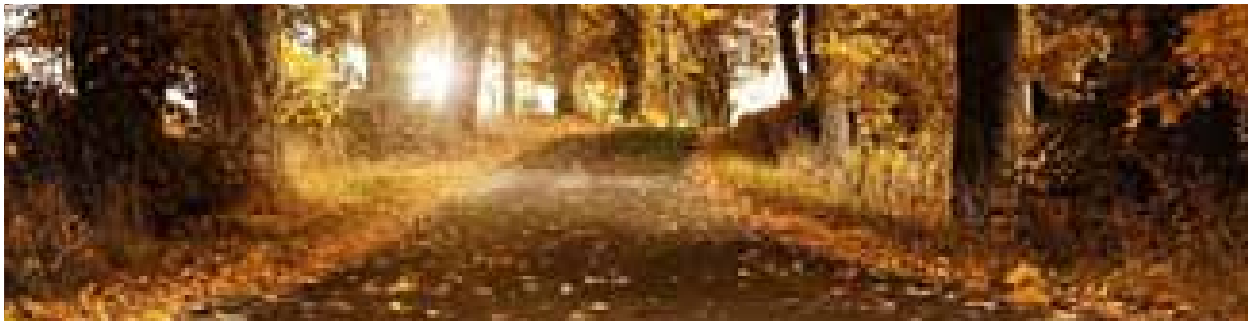
यह तीनों विषय: ज्ञान, शक्ति और स्वयं आधारित होना (जो चमत्कार के लिए जड़ हैं) केवल ईश्वर ही के लिए संपूर्ण रूप से उपयुक्त है ।

2. पूर्व नबियों का भविष्य में आने वाले नबियों का शुभ संदेश देना ।

ईश देवत्व की सत्यता का सबूत पूर्व नबियों का भविष्य में आने वाले नबी का शुभ संदेश देना है। और निश्चित रूप से ईश्वर ने हर नबी से यह प्रतिज्ञा ली है कि अगर उनके जीवन में मुहम्मद भेजे जायें तो वह जरूर उन पर ईमान लाये। ईश्वर ने कहा और जब खुदा ने पैगम्बरों से अहद लिया कि जब मैं तुमको किताब और दानाई अता करूँ, फिर तुम्हारे पास कोई पैगम्बर आये जो तुम्हारी किताब कि तस्दीक करे तो तुम्हें जरूर उस पर ईमान लाना होगा । और जरूर उस कि मदद करनी होगी । और (अहद लेने के बाद) पूछा कि भला तुम ने इकरार किया और इस इकरार पर मेरा ज़िम्मा लिया (या मुझे ज़ामिन ठहराया) उन्होंने, कहा (हां) हमने इकरार किया । (खुदा ने) फ़रमाया कि तुम (इस अहद व पैमान के) गवाह रहो और मैं भी तुम्हारे साथ गवाह हूँ । (अले-इमान, 81)

3. नबी और रसूलों की परिस्थितियों में गौर करना

नबी और रसूल अपने-अपने लोक के साथ मिलते-जुलते थे और व्यवहार भी करते थे, इस द्वारा उनकी लोक को अपने अपने रसूलों के चरित्र जानने और उनकी सत्यता मानने का अवसर मिला। परन्तु जब पवित्र मरयम और अल्लाह के नबी ईसा पर लोगों ने कलंक लगाया, तो ईश्वर ने इन दोनों की सत्यता का वर्णन किया । ईश्वर ने कहा



सच्चा ईसाई धर्म

ईसाई धर्म को मोहम्मद (स) ने ईसा मसीह के अनुसार उसके नियमों तक पहुँचाने का निश्चय किया था, वह धर्म बोलिस की ओर से फैलाई हुई गुप्त उपदेश, और ईसाई समुदायों की ओर से मिलाई हुई भयानक तृटियों से बिल्कुल विपरीत है। निश्चित रूप से मोहम्मद सल्लल्लाहु व सल्लम की आशा और तमन्ना ये भी के इब्राहीम के धर्म की बरकत सिर्फ अपनी लोक के लिए आवंटन ना करें, बल्कि सारे लोगों को यह बरकत घर ले। निश्चित रूप से आपका धर्म लाखों मनुष्यों के हिदायत और शिक्षा का साधन बना। अगर यह धर्म ना होता तो लोग दरिद्रगी और अन्याय में डूबे हुए होते, और न उनके पास इस्लाम धर्म की दी हुई भाई चारगी होती।

लेटनर

ब्रिटिश प्राच्य विद्या विशारद

फिर वह उस (बच्चे) को उठा कर अपनी क्रौम के लोगों के पास ले आयी । वे कहने लगे कि मरयम । यह तो तूने बुरा काम किया । ऐ हारून की बहन । न तो तेरा बाप बुरी आदतों वाला था और न तेरी माँ ही बदकार थी । तो मरयम ने उस लड़के की तरफ इशारा किया । वह बोले कि हम (उस से जो की गोद का बच्चा है) किस तरह बात करें। (बच्चे ने) कहा कि मैं खुदा का बन्दा हूँ, उस ने मुझे किताब दी है और नबी बनाया है । और मैं जहाँ हूँ (और जिस हाल में हूँ) मुझे बरकत वाला बनाया है और जब तक ज़िंदा हूँ मुझ को नमाज़ और ज़कात का हुक्म इर्शाद फरमाया है। और (मुझे) अपनी माँ के साथ नेक सुलूक करने वाला (बनाया है) और सरकश व बद-बख्त नहीं बनाया और जिस दिन मैं पैदा हुआ, जिस दिन मैं मरूंगा और जिस दिन ज़िंदा करके उठाया जाऊंगा, मुझ पर सलाम (व रहमत) है। (मरयम, 27-33)

इस प्रकार से ईसा ने गोदी में बात की । और मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को ईशदूतत्व से पहले उनके कबीले वाले (खुरैश) सत्य और अमानतदार कहकर पुकारते थे, क्योंकि आपके पास सत्यता और अमातन दारी थी। खुरआन ने इसी ओर ध्यान दिलाया, ताकि रसूल की सत्यता पर सबूत प्रबंध किया जाय, इसलिए कि आप का व्यक्तित्व, आप का जीवन और आपके चरित्र सब से बड़ा सबूत हैं । ईश्वर ने कहा (यह भी) कह दो कि अगर खुदा चाहता तो (न तो) मैं ही यह (किताब) तुम को पढ़कर सुनाता और न वही तुम्हें इस के बारे में बताता । मैं इस से पहले तुम में एक उम्र रहा हूँ (और कभी एक कलिमा भी इस तरह का नहीं कहा) भला तुम समझते नहीं । (यूनुस, 16)

4. रसूलों के संदेश में गौर करना ।

ईश दूतत्व की एक दलील यह भी है कि रसूल का संदेश मुख्य नियम में दूसरे नबी और रसूलों के संदेश के मुख्य नियम के समान हो । परन्तु रसूल ईश्वर के एकतत्व का संदेश दे, इसलिए कि यही वह लक्ष्य है जिसके लिए ईश्वर ने प्राणी की सृष्टि की है, और हसी लक्ष्य के लिए रसूलों को भेजा है । ईश्वर ने कहा और जो पैगम्बर हमने तुम से पहले भेजे उन की तरफ यही “वहयी” भेजी कि मेरे सिवा कोई माबूद नहीं, तो मेरी ही इबादत करो । (अल्-अम्बियाइ, 25)

और ईश्वर ने कहा और (ऐ मुहम्मद !) जो अपने पैगम्बर हमने तुम से पहले भेजे हैं, उनके हाल मालूम कर लो । क्या हम ने (खुदा-ए-) रहमान के सिवा और माबूद बनाए थे कि उनकी इबादत की जाए । (अल् जुखूफ, 45)

और ईश्वर ने कहा

और हमने हर जमात में पैगम्बर भेजा कि खुदा ही की इबादत करो और बुतों (की पूजा करने) से बचो, तो उन में कुछ ऐसे हैं, जिन को खुदा ने हिदायत दी और कुछ ऐसे हैं, जिन पर गुमराही साबित हुई, सो ज़मीन पर चल-फिर कर देखलो कि झुटलाने वालों का अंजाम कैसा हुआ। (अल-नहल, 36)

इसी बात का मुहम्मद ने भी संदेश दिया । परन्तु रसूल सामान्य मानव की तरह एक मानव ही हैं, जिन का “वही” के कारण सम्मान बढ़ गया । ईश्वर ने कहा कह दो कि मैं तुम्हारी तरह का एक बशर हूँ, अलबत्ता मेरी तरफ वही आती है कि तुम्हारा माबूद (वही) एक माबूद है, तो जो शख्स अपने परवरदिगार से मिलने कि उम्मीद रखे, चाहिए कि नेख अमल करे

सच की गवाही

मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैही व सल्लम ने किसी भी दिन अपने-आपको देवत्व चरित्र और अदभुत शक्तियों से परिचित नहीं किया। इसके विपरीत आप पाठ के उल्लेख करने पर उत्सुक थे। इस कारण से कि आप केवल अल्लाह के प्रवक्ता हैं जिसको अल्लाह ने लोगों तक (देवत्व संदेश) वही पहुँचाने के लिए चयन किया है।



रोम लॉर्डो
ब्रिटिश मूर्तिकार
वं आलोचक

और अपने परवरदिगार के इबादत में किसी को शरीक न बनाए । (अल-कहफ, 110)

रसूल अपने आप को राजा या राष्ट्रपति मानने का संदेश नहीं देता है । ईश्वर ने कहा कह दो कि मैं तुम से यह नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह तआला के खज़ाने हैं और न (यह कि) मैं ग़ैब जानता हूँ और न तुम से यह कहता हूँ कि मैं फरिश्ता हूँ । मैं तो सिर्फ उस हुक्म पर चलता हूँ जो मुझे (खुदा की तरफ से) आता है, कह दो कि भला अंधा और आंख वाले बराबर होते हैं, तो फिर तुम गौर क्यों नहीं करते । (अल्-अनआम, 50)

और न ये रसूल अपने संदेश के बदले किसी से कुछ उजरत मांगते हैं। ईश्वर ने अपने नबी नूह, हद, सालेह, लूत और शोयेब के बारे में यह खबर दी कि उन्होंने अपने लोक से कहा और मैं इस काम का तुमसे बदला नहीं मांगता । मेरा बदला तो खुदा-ए-रब्बुल आलमीन ही पर है। (अल् शुअरा, 109, 127, 145, 164, 180)

ईश्वर के लिए निष्पक्षता

हालांकि मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैही व सल्लम अरब प्रायद्वीप के सरदार थे, लेकिन अपने कभी टेटल के बारे में विचार नहीं किया, और न इनके पीछे अपनी मेहनत लगाई। बल्कि अपनी जगह आप केवल इस बात पर संतोष किया कि आप अल्लाह के रसूल हैं और मुसलमानों के सेवक हैं। स्वयं आप अपने घर की सफाई करते थे, अपना चप्पल स्वयं सीलेते थे। आप (स) नेक और दानी थे। इस प्रकार के आप (स) चलनेवाली कोमल हवा थे, कोई भिक्षुक, और पीड़ित जब भी आपके पास आता तो पने पास जो भी है उसे दे देते थे, और जो आपके पास होता था वह अधिक समयों में स्वयं आपके लिए ही पर्याप्त नहीं होता था।

एफ्लिकोबोल्ड

ब्रिटिश महान स्त्री

मुहम्मद ने अपने लोक से कहा (ऐ पैगम्बर !) कह दो कि मैं तुम से इस का बदला नहीं मांगता और न मैं बनावट करने वालों में हूँ । (साद, 86)

5. रसूलों को ईश्वर की सहायता और समर्थन मिलना ।

नबी और रसूलों की सत्यता का एक सबूत यह भी है कि ईश्वर की सहायता और सुरक्षा उनके साथ है, इसलिए कि यह बात बिल्कुल समझ से बाहर है कि कोई व्यक्ति नबी या रसूल होने का दावा करे और वह अपने दावे में झूठा हो, फिर भी ईश्वर की सहायता, सुरक्षा और समर्थन उसके साथ हो, और उसका संदेश लोगों में फैल गया हो, बल्कि ईश्वर का दण्ड उसपर न आया हो ? ईश्वर ने कहा और यों ही झूठ, जो तुम्हारी जुबान पर आ जाए, मत कह दिया करो कि यह हलाल है और यह हराम है कि खुदा पर झूठ बूहतान बांधने लगे । जो लोग खुदा पर झूठ बूहतान बांधते हैं, उन का भला नहीं होगा । (अल् नहल, 116)

और ईश्वर ने कहा फिर उन की गर्दन की रग काट डालते फिर तुम में से कोई (हमें) इस से रोकने वाला न होता । (अल् हाक्कः 44-46)

मैं आपही की तरह इन्सान हूँ

मोहम्मद सल्लल्लाह अलैही व सल्लम निश्चित रूप से ऐतिहासिक व्यक्ति है। अगर आप न होते इस्लाम धर्म न बढ़ता ना फैलता। आपने यह कहने में कभी झिजक महसूस नहीं की कि वह दूसरों की तरह एक मनुष्य है। जिनको मृत्यु आती है, और न यह कहने में हिच किचाया कि आप अल्लाह से माफी और क्षमा माँगते हैं। आपने अपनी मृत्यु से पहले स्वयं से हुई गलतियों से अपने आप को साफ करने का निश्चय किया फिर आप मेंबर पर धर्मपदेश के लिए खड़े हो गये और यह कहा-ऐ मुसलमान अगर मैं किसी को चोट पहुँचाई होतो यह मेरी पीठ है वह अपना बदला ले लें, या अगर मैं किसी का माल छीना हो तो मेरा माल उसकी संपत्ति है।

हेन्ड्री सीरोया

फ्रेंच प्राच्य विद्या विशारद



रसूलों के संदेश के मुख्य नियम

सारे नबी और रसूलों का संदेश एक ही महत्वपूर्ण बुनियाद पर आधारित है, परन्तु सारे रसूलों का संदेश एक ही है । उस ने तुम्हारे लिए दीन का वही रास्ता मुकर्रर किया, जिस (के अपनाने) का नूह को हुक्म दिया था और जिस की (ऐ मुहम्मद !) हम ने तुम्हारी तरफ वही भेजी है और जिस का इब्राहीम और मूसा और ईसा को हुक्म दिया था, (वह यह) कि दीन को कायम रखना और उस में फूट न डालना । जिस चीज़ की तरफ तुम मुश्किलों को बुलाते हो, वह उनको मुश्किल गुज़रती है । अल्लाह जिसको चाहता है, अपनी बारगाह का चुना हुआ कर लेता है और जो उसकी तरफ रुजूअ करे, उसे अपनी तरफ रास्ता दिखा देता है। (अल् शुअरा, 31)

इसी कारण सारे नबी और रसूलों का धर्म एक था, जैसा कि ईश्वर ने कहा ऐ पैगम्बरों ! पाकीज़ा चीज़े खाओ और नेक अमल करो । जो अमल तुम करते हो, मैं उनको जानता हूँ । और यह तुम्हारी जमात (हकीकत में) एक ही जमाअत है और मैं तुम्हारा परवरदिगार हूँ तो मुझ से डरो । (अल् मुमिनून, 51,52)

अगर चे इन रसूलों के धर्मों के गौण नियम अलग-अलग हो । ईश्वर ने कहा हम ने तुम में से हर एक (फिर्क) के लिए एक दस्तूर और एक तरीका मुकर्रर किया है। (अल् माइदह, 48)

अगर गौण नियम मुख्य नियम के विरोध में हों, तो यह नियम बुद्धिमत्ता, लाभ और दया से ख़ाली होंगे, बल्कि असंभव है कि यह नियम अपनी छवि के अलावा किसी और छवि में आते । ईश्वर ने कहा और अगर (खुदा-ए-बर) हक उनकी ख्वाहिशों पर चलें तो आसमान और ज़मीन और जो उन में हैं, सब टूट-फूट जाए । (अल् मुमिनून, 71)

रसूलों और ईशतत्व में जिन मुद्दों पर सब सहमत हैं, उन में से कुछ ये हैं ईश्वर उसके एंजिल, उसकी पुस्तकों और रसूलों पर, भविष्य जीवन और अच्छे और बुरे भाग्य पर ईमान लाना हैं। ईश्वर ने कहा (खुदा के) रसूल उस किताब पर जो उनके परवरदिगार की तरफ से उन पर नाज़िल हुई, ईमान रखते हैं और मोमिन भी सब खुदा पर और उसके फ़रिश्तों पर और उसकी किताबों पर और उसके पैगम्बरों पर ईमान रखते हैं (और कहते हैं कि) हम उस के पैगम्बरों से किसी में कुछ फ़र्क नहीं करते । और वे (खुदा से) अर्ज़ करते हैं कि हम ने (तेरा हुक्म) सुना और कुबूल

किया । ऐ परवरदिगार । हम तेरी बखिश मांगते हैं और तेरी ही तरफ लौट कर जाना है। (अल्-बकरा, 285)

एक ईश्वर की प्रार्थना का आदेश जिसका कोई भागीदार नहीं, उस ईश्वर को पत्नी, संतान, भागीदार और समानता से श्रेष्ठता का आदेश और मूर्ति पूजा से दूर रहने का आदेश। ईश्वर ने कहा । और जो पैगम्बर हमने तुम से पहले भेजे, उन की तरफ यही वही भेजी कि मेरे सिवा कोई माबूद नहीं, तो मेरी ही इबादत करो । (अल्-अम्बिया, 25)

इसी प्रकार से ईश्वर के पथ पर चलने, और इसके विरोधी हर पथ से दूर रहने का आदेश, लेन-देन और नाप-तोल पूरा करने का आदेश, माता-पिता के साथ अच्छा व्यवहार करने का आदेश, लोगों के बीच न्याय करने का आदेश, बात-चीत और काम-काज में सच बोलने का आदेश, गुप्त और प्रकट, अशिलताएँ, पाप, अन्याय से किसी पर जुल्म करने पर, अपने संतान की हत्या और अन्याय से किसी मनुष्य की हत्या करने पर प्रतिबंध लगाने का आदेश, ब्याज, अनाथ का धन उपयोग न करने का आदेश और घमण्ड, फिजूल खर्च और अन्याय से लोगों का धन उपयोग न करने का आदेश देना ।

भविष्य जीवन पर विश्वास रखना । हर मनुष्य वास्तविक रूप से यह जान रखता है कि एक न एक दिन वह मरने वाला है। लेकिन मृत्यु के बाद उसका भाग्य क्या होगा । क्या वह भाग्यवान होगा या दुर्भाग्यवान? और सारे नबी और रसूल अपने-अपने भक्तों को यह संदेश दे चुके हैं कि वे सब मृत्यु के बाद दुबारा जीवित होंगे और उन्हें अपने कार्यों का फल मिलेगा, अगर कार्य अच्छे हैं तो अच्छा, और अगर बुरे हों तो बुरा फल मिलेगा । इस आदेश (मृत्यु के बाद जीवित होने और अपने कार्य के फल मिलने का आदेश) को श्रेष्ठ बुद्धि भी स्वीकार करती है और देवत्व धर्म भी इससे सहमत हैं। निश्चित रूप से वह ईश्वर जो जानी, बुद्धिमान और शक्तिवान है, इस बात से अश्वेत है कि वह अपनी प्रजा की सृष्टि बिना किसी लक्ष्य के करे और उन्हें बेकार छोड़ दे। ईश्वर ने कहा और हम ने आसमान और ज़मीन को और जो (कायनात) उन में है, उस को मस्बहत से खाली नहीं पैदा किया। यह उन का गुमान है, जो काफिर हैं, सो काफिरों के लिए दीजख का अज़ाब है। (साद, 27)

बल्कि ईश्वर ने एक महत्वपूर्ण लक्ष्य और एक महान बुद्धिमत्ता के कारण अपने प्रजा की सृष्टि की है, ईश्वर ने कहा । और मैंने जिनको और इंसानों को इसलिए पैदा किया है कि मेरी इबादत करें । (अल्-ज़ारयात, 56)

परन्तु इस जैसे बुद्धिमान ईश्वर को यह शोभा नहीं देता कि आज्ञाकारी और अनाज्ञाकारी दोनों इस ईश्वर की नज़र में एक समान हों । ईश्वर ने कहा । जो लोग ईमान लाए और अमल करते रहे, क्या उन को हम उन की तरह कर देंगे, जो मुल्क में फसाद करते हैं या परहेज़गारों को बद-कारों की तरह कर देंगे । (स्वाद, 28)

इसी कारण की अदभुत शक्ति और महान बुद्धिमत्ता यह है कि वह भविष्य जीवन में हर मनुष्य को अपने कार्य का फल देने के लिए दुबारा जीवित करे, ताकि अच्छे कार्य करने वाले को अच्छा फल दें और बुरे कार्य करने वाले को दण्ड दें। ईश्वर ने कहा । ताकि ईमान वाले और मेक काम करने वालों को इंसाफ के साथ बदला दे । औस जो काफिर है उसके लिए पीने को बहुत गर्म पानी और दर्द देने वाला अज़ाब होगा, क्योंकि (खुदा से) इंकार करते थे। (यूनस, 4)

और इसी कारण मृत्यु के बाद मनुष्य को हिसाब-किताब के लिए दुबारा जीवित करना कितान ही आसान है। क्या यह वही तो पवित्र ईश्वर है जिसने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की है। जब ईश्वर ने प्रजा को बिना किसी पिछले नमूने के सृष्टि कि, तो क्या वह ईश्वर दुबारा अपने प्रजा की सृष्टि करने की शक्ति नहीं रखता है। ईश्वर ने कहा । क्या उन्होंने नहीं समझा कि जिस खुदा ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया और उन के पैदा करने से थका नहीं, वह इस (बात) पर भी कुदरत रखता है कि मुर्दों को जिंदा कर दे हाँ, (हाँ) वह हर चीज़ पर कुदरत रखता है । (अल्-अह-ज़ाफ, 33)

और ईश्वर ने कहा । भला जिस ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया, क्या वह इस पर कुदरत नहीं रखता कि (उन को फिर) वैसे ही पैदा करदेँ क्यों नहीं, और वह तो बड़ा पैदा करने वाला (और) इल्म वाला है। (थारहीन, 81)

परन्तु जो ईश्वर प्रथम सृष्टि की शक्ति रखता है, वह निश्चित रूप से दुबारा सृष्टि करने पर अधिक शक्तिवान होगा। ईश्वर ने कहा । और वही तो है जो खल्कत की पहली बार पैदा करता है, फिर उसे दोबारा पैदा करेगा और यह उसको बहुत आसान है और आसमानों और ज़मीन में उस को शान बहुत बुलंद है और वह गालिब हिकमत वाला है। (अल्-रूम, 27)

पाक-साफ जड़

इस्लाम मुहम्मद (स) की ओर से कोई नया मज़हब नहीं है। परन्तु ईसा के आसमान पर उठाये जाने के 600 साल बाद पृथ्वी में दुबारा उसी वही का व्याप्त हुआ जो पूर्व आसमानी मज़हब की असल थी और इस वही ने सारे मज़हब को उनकी मूल जड़ की ओर लौटा दिया। सब नबी जिनको ईश्वर ने भेजा है वे सब के सब मुसलमान थे और सब का संदेश हमेशा एक ही था।

डिपोरा पोटर

अमेरिका के पत्रकार



बल्कि इस संसारिक जीवन में भी ईश्वर के आदेश से इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के सामने मुर्दे को ज़िंदा किया गया। ईश्वर ने कहा। और जब इब्राहीम ने खुदा से कहा कि ऐ परवरदिगार मुझे दिखा कि तू मुर्दों को किस तरह ज़िंदा करेगा। खुदा ने फरमाया कि क्या तुम ने (इस बात को) बावर नहीं किया (यानी माना नहीं) उन्होंने ने कहा, क्यों नहीं, लेकिन (मैं देखना) इसलिए (चाहता हूँ) कि मेरा दिल कामिल इत्मीनान हासिल कर ले। खुदा ने फरमाया कि चार जानवर पकड़ कर अपने पास मंगालो (और टुकड़े-टुकड़े कर दो) फिर उनका एक-एक टुकड़ा हर एक पहाड़ पर रखवा दो। फिर उनको बुलाओ तो वे तुम्हारे पास दौड़ते चले आएँगे और जान रखो कि खुदा गालिब और हिक्मत वाला है। (अल् बकर: 260)

और इसी प्रकार से ईसा (अलैहिस्सलाम) के द्वारा भी ईश्वर के आदेश से मुर्दे को ज़िंदा किया गया। ईश्वर ने कहा।

जब खुदा (ईसा से) फरमाएगा कि ऐ ईसा बिन मरयम। मेरे उन एहसानों को याद करो, जो मैंने तुम पर और तुम्हारी वालिदा पर किए जब मैंने रूहुल कुदूस (यानी जिब्रील) से तुम्हारी मदद की। तुम झूले में और जवान होकर एक ही नस्क पर लोगों से बातें करते थे और जब मैंने तुम को किताब और हिक्मत और तौरात और इंजील सिखायी और जब तुम मेरे हुक्म से मिट्टी का जानवर बनाकर उस में फूँक मार देते थे, तो वह मेरे हुक्म से उड़ने लगता था और पैदाइश अंधे और सफेद दाग वाले मेरे हुक्म से चंगा कर देते थे और मुर्दे को मेरे हुक्म से (ज़िंदा करके कब्र से) निकाल खड़ा करते थे और जब मैंने बनाई इसाईल (के हाथों) को तुम से रोक दिया, जब तुम उनके पास खुले निशान लेकर आए, तो जो उन में से काफिर थे, कहने लगे कि यह तो खुला जादू है। (अल् माइद: 100)

सच्ची एकीकरण (तौहीद)

अरबी रसूल मुहम्मद (स) ने प्रेरणादायक आवाज़ से अपने ईश्वर के साथ गहरा संबंध रखने की ओर बुलाया। मूर्ती पूजा करनेवालों, ईसाइयत और पहूदियन के मानने वालों क सच्ची एकीकरण सिध्दांत की ओर बुलाया। आप इस बात पर सहमत थे के व मानव प्रतिक्रियावादी प्रवृत्तियाँ जो मानव को प्रजापति ईश्वर के साथ और अन्य ईश्वर पर विश्वास रखने को बुलाते हैं। ऐसे प्रवृत्तियों के साथ खुला संघर्ष करने पर आप सहमत थे।



व्लोरावीशा फाग्लेरी
प्राच्य विद्या विशारद

धैर्यवान रसूलों के इतिहास के कुछ भाग

सारे लोग सीधे रास्ते पर चल रहे थे, फिर उनके बीच आपसी फूट पड़गयी, तो ईश्वर ने अपने रसूलों को भेजा, ताकि ये रसूल लोगों को ज्ञान दें और उन्हें डरायें। वही तो है, जिस ने अ-पढ़ों में उन्हीं में से (मुहम्मद को) पैगम्बर (बनाकर) भेजा, जो उसके सामने उस की आयतें पढ़ते और उनको पाक करते और (खुदा की) किताब और हिक्मत सिखाते हैं और इस से पहले तो ये लोग खुली गुमराही में थे। (अल् जुमुअ: 2)

लेकिन लोग रसूलों के संदेश को लेकर दो समूह में बँट गये, एक समूह ने रसूलों को सच्चा माना और उन पर विश्वास किया, दूसरे समूह ने रसूलों को झुठलाया, उनको और उनके लाये हुए संदेश का इंकार किया और ज़िद में आकर उनको सच न माना। (पहले तो सब) लोगों का एक ही मज़हब था। (लेकिन वे आपस में इख़िलाफ़ करने लगे) तो खुदा ने (उनकी तरफ) बशारत देने वाले और डर सुनाने वाले पैगम्बर भेजे और उनपर सच्चाई के साथ किताबें नाज़िल की, ताकि जिन मामलों में लोग इख़िलाफ़ करते थे, उनका उनमें फैसला कर दे। और इसमें इख़िलाफ़ भी उन्हीं लोगों ने किया जिनको किताब दी गयी थी, बावजूद कि उनके पास खुले हुए हुक्म आचुके थे और यह इख़िलाफ़ उन्होंने (सिर्फ़) आपस की ज़िद से (किया) तो जिस हक़ बात में इख़िलाफ़ करते थे, खुदा ने अपनी मेहरबानी से मोमिनों को उस की राह दिखा दी और खुदा जिसको चाहता है, सीधा रास्ता दिखा देता है। (अल् बकर: 213)

इन लोगों ने अपनी हवस के पीछे चलते हुए और घमंड करते हुए रसूलों का इंकार किया। तो जब कोई पैगम्बर तुम्हारे पास ऐसी बातें लेकर आयें जिनको तुम्हारा जी नहीं चाहता था, तो तुम सरकश हो जाते रहे और (नबियों के) एक गिरोह को तो झुठलाते रहे और एक गिरोह को कत्ल करते रहे। (अल् बकर: 87)

ईश्वर ने सारे रसूलों पर विश्वास (ईमान) रखने का आदेश दिया है। (मुसलमानों।) कहो कि हम खुदा पर ईमान लाए और जो (किताब) हम पर उतरी, उस पर और जो (सहीफ़े) इब्राहीम और इस्माईल और इस्हाक़ और याकूब और उनकी औलाद पर नाज़िल हुए, उन पर और जो (किताबें) मूसा और ईसा को अता हुई उन पर और जो और पैगम्बरों को उनके परवरदिगार की तरफ से मिली, उन पर (सब पर ईमान लाये) हम उन पैगम्बरों में से किसी में कुछ फ़र्क



नहीं करते और हम उसी (खुदा-ए-वाहिद) के फरमाबरदार हैं। (अल् बकर: 136)

ईशवर ने रसूलों पर विश्वास रखने वालों से इस जीवन और भविष्य जीवन में प्रसन्नता और सफलता का वादा किया है। इसी प्रकार से रसूलों का इंकार करने वालों से भविष्य जीवन से पहले पहले इसी जीवन में घाटे और अप्रसन्नता की धमकी दी है। परन्तु विश्वास रखने वालों के बारे में ईशवर ने यह कहा। और जो शख्स खुदा और उसके पैगम्बर और मोमिनों से दोस्ती करेगा तो (वह खुदा की जमाअत में दाखिल होगा और) खुदा की जमाअत ही गलबा पाने वाली है। (अल् माइद: 56)

और ईशवर ने यह भी कहा (यानी) जो लोग ईमान लाते और जिन के दिल खुदा की याद से आराम पाते हैं (उन को) और सुन रखो कि खुदा की याद से दिल आराम पाते हैं। जो लोग ईमान लाए और नेक अमल किए, उन के लिए खुशहाली और

उम्दा ठिकाना है। (अल् राद, 28-29)

ईशवर ने रसूलों के इंकार करने वालों के बारे में कहा (और) ऐसा खयाल न करना कि काफिर लोग (हम को) ज़मीन में मग़लूब कर देंगे, (ये जा ही कहाँ सकते हैं) इन का ठिकाना दोज़ख है और वह बहुत बुरा ठिकाना है। (अल् नूर, 57)

हर रसूल और हर नबी के दुश्मन हुआ करते थे। ईशवर ने कहा । और इसी तरह हमने शैतान-इंसानों और जिन्नो-को हर पैगम्बर का दुश्मन बनादिया था। वे धोखा देने के लिए एक दूसरे के दिल में मुलम्मा की बातें डालते रहते थे और अगर तुम्हारा परवरदिगार चाहता, तो वे ऐसा न करते, तो उन को और जो कुछ ये गढ़ते हैं, उसे छोड़ दो। (अल् अनआम, 112)

फिर ईशवर के रसूलों का इन्कार करने वालों ने इनके साथ दुर्व्यवहार किया, इन पर जुल्म किया, इनके साथ उपहास किया और इनका मज़ाक उड़ाया। ईशवर ने कहा । और उन के पास कोई पैगम्बर नहीं आता था, मगर वे उसका मज़ाक उड़ाते थे। (अल् हिज़, 11)

ईशवर ने कहा और कोई पैगम्बर उन के पास नहीं आता था, मगर वे उसका मज़ाक उड़ाते थे। (अल् जुखरूफ, 7)

और ईशवर ने कहा और तुम से पहले भी पैगम्बरों के साथ मज़ाक होता रहा

है, सो जो लोग उन में से मज़ाक किया करते थे, उन को मज़ाक की सज़ा ने आ घेरा। (अल् अनआम, 10)

इसी प्रकार से इन लोगों ने अपने रसूलों को बहिष्कार करने की धमकी दी, या फिर उन्हें अपने धर्म को छोड़ने का विकल्प दिया। ईशवर ने कहा और जो काफिर थे उन्होंने अपने पैगम्बरों से कहा कि (या तो) हम तुम को अपने मुल्क से बाहर निकाल देंगे या हमारे मज़हब में दाखिल हो जाओ। तो परवरदिगार ने उन की तरफ वह्य भेजी कि हम ज़ालिमों को हलाक कर देंगे । (इब्राहीम, 13)

यहाँ तक कि यह धमकियाँ हत्या के प्रयास तक पहुँच गयी । और हर उम्मत ने अपने पैगम्बर के बारे में यही इरादा किया कि उसको पकड़ लें (गाफिर, 5)

यानी उसकी हत्या करें, यहाँ तक कि उनमें से कुछ लोगों ने तो अपने रसूलों की हत्या भी की है। तो जब कोई पैगम्बर तुम्हारे पास ऐसी बातें लेकर आये जिनको तुम्हारा जी नहीं चाहता था, तो तुम सरकश हो जाते रहे और (नबियों के) एक गिरोह को तो झुठलाते रहे और एक गिरोह को क़त्ल करते रहे।

(अल् बकर: 87)

फिर इसके बाद ईशवर ने इनकार करने वालों को तबाह व बरबाद कर दिया, और रसूलों के धर्मों का बोल-बाला करदिया, ईशवर ने कहा । खुदा का हुक्म नातिक्र है कि मैं और मेरे पैगम्बर ज़रूर ग़ालिब रहेंगे, बेशक खुदा ज़ोरावर (और) ज़बरदस्त है। (अल् मुजादल: 21)

और ईशवर ने कहा और अपने पैगाम पहुँचाने वाले बन्दों से हमारा वायदा हो चुका है, कि वही (ग़ालिब व) मंसूर (मदद किए हुए) हैं। (अल् साफ़फ़ात, 171-172)

ईशवर ने अपने नबी और रसूलों को सुरक्षित रख लिया । और जो लोग ईमान लाये और डरते थे, उनको हम ने निजात दी। (अल् नमल, 53)

और ईशवर ने यह भी कहा और जो ईमान लाये और परहेज़गारी करते रहे, उनको हमने बचा लिया। (फुस्सिलत, 18)

हर नबी अपनी क़ौम और अपने समय के उपयुक्त वह संदेश लेकर आये जो उनके जीवन को सुधारे और उन्हें पवित्र बनाये। परन्तु जो किसी भी रसूल का इंकार करेगा, वह सब रसूलों का इन्कार



मारसेल ब्वोदर
फ्रेंच विचारक

एक ही मशाल से

मुहम्मद (स) के संदेश के अंतर्गत यह नहीं था के आप से पूर्व की जो धार्मिक किताबें हैं उनको ग़लत ठहराये। परन्तु उसको सच्छ मानना और उन आसमानी किताबों में जो परिवर्तन और उल्लंघन हुआ है उसका खंडन करना है। आप को पूर्व रसूलों की शिक्षा को हर प्रकार की उल्लंघन से साफ करने की, इनको विस्तार करने और इनको संपूर्ण करने की जिम्मेदारी दी गयी। ताकि ये शिक्षा सारे विश्व में रहने वाले मानवों के लिए हर युग और समय में स्वीकृत हो

करने वाले व्यक्ति के समान है। जो ईसा (अलैहिसलाम) पर विश्वास नहीं रखेगा, निश्चित रूप से वह मूसा (अलैहिसलाम) पर भी विश्वास नहीं रखने वाला होगा। और मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने ईसा के संदेश को ही दोहराया। ईश्वर ने कहा और (ऐ पैगम्बर १) हम ने तुम पर सच्ची किताब नाज़िल की है, जो अपने से पहली किताबों की तस्दीक करती है और उन (सब) पर शामिल है, तो जो हुक्म खुदा ने नाज़िल फरमाया है, उस के मुताबिक उनका फैसला करना और हक, जो तुम्हारे पास आचुका है, उस को छोड़कर उनकी ख्वाहिशों की पैरवी न करना। (अल् माइद: 48)

जो व्यक्ति मुहम्मद पर विश्वास नहीं रखता है निश्चित रूप से वह ईसा पर भी विश्वास रखने वाला नहीं होगा। हर समय और सारी क़ौमों के लिए नबी और रसूलों में से किसी एक पर ईश देवत्व का अंत होना ज़रूरी था न कि किसी विशेष समय और विशेष क़ौम के लिये, वरना आकाश और पृथ्वी के प्रजापति और ईश्वर की वही (रहस्योद्घाटन) की मदद के बिना मानवता नष्ट हो जाती। परन्तु मुहम्मद नबी और रसूलों के अंत में आने वाले रसूल हैं। ईश्वर ने कहा। मुहम्मद तुम्हारे मर्दों में से किसी के वालिद नहीं है, बल्कि खुदा के पैगम्बर और नबियों (की नबूवत) की मुहर (यानी उस को खत्म कर देने वाले हैं) और खुदा हर चीज़ को जानता है। (अल् अहज़ाब, 40)

तो मानवता का इतिहास समझा जाने वाला नबी और रसूलों का इतिहास क्या है।

हम उन (रसूलों) की बीच कोई अंतर नहीं रखते।

खुराने करीम ही वह एक दिव्य किताब है जो दूसरे आसमानी किताबों को मान्यता देती है। जब कि हम यह देखते हैं कि दूसरी सारी किताबें एक दूसरे को स्वीकार नहीं करती हैं।



बशीर शद

भारतीय ईसाई धार्मिक कार्यकर्ता

हम यहाँ पर ईश्वर के मानव की सृष्टि का इरादा करने से लेकर आदम (अलैहिसलाम) के स्वर्ग से निकल कर पृथ्वी पर आने तक का इतिहास का वर्णन करेंगे। और (वह वक्त याद करने के काबिल है) जब तुम्हारे परवरदिगार ने फ़रिश्तों से फ़रमाया कि मैं ज़मीन में (अपना) नायब बनाने वाला हूँ। उन्होंने कहा, क्या तू उसमें ऐसे शख्स को नायब बनाना चाहता है, जो खराबियाँ करें और कुशत व खून करता फिर और हम तेरी तारीफ के साथ तस्बीह व तक्दीस करते रहते हैं। (खुदा ने) फ़रमाया, मैं वह बातें जानता हूँ जो तुम नहीं जानते। और उसने आदम को सब (चीज़ों के) नाम सिखाये, फिर उनको फ़रिश्तों के सामने किया और फरमाया कि अगर तुम सच्चे हो तो मुझे इनके नाम बताओ। उन्होंने कहा, तू पाक है जितना इल्म तूने हमें बख़्शा है, उसके सिवा हमें कुछ मालूम नहीं। बेशक तू दाना (सर्व ज्ञाता) (और) हिक्मत वाला है। (तब) खुदा ने (आदम को) हुक्म दिया कि आदम। तुम इन को उन (चीज़ों) के नाम बताओ। जब उन्होंने उनको उनके नाम बताये तो (फ़रिश्तों से) फ़रमाया, क्यों, मैंने तुमसे नहीं कहा था कि मैं आसमानों और ज़मीन की (सब) पोशीदा बातें जानता हूँ और जो तुम ज़ाहिर करते हो और जो पोशीदा करते हो (सब) मुझको मालूम है। और जब हमने फ़रिश्तों को हुक्म दिया कि आदम के आगे सज्दा करो तो वे सब सज्दे में गिर पड़े, मगर शैतान ने इंकार किया और गुरुर (घमण्ड) में आकर काफ़िर बन गया। और हमने कहा कि ऐ आदम। तुम और तुम्हारी बीवी जन्नत में रहो और जहाँ से चाहो,

बे-रोक-टोक खाओ (पीयो), लेकिन उस पेड़ के पास न जाना, नहीं तो ज़ालिमों में (दाखिल) हो जाओगे। फिर शैतान ने दोनों को वहाँ से फिसला दिया और जिस (ऐश व निशात) में थे, उससे उनको निकल वा दिया। तब हमने हुक्म दिया कि (जन्नत से) चले जाओ, तुम एक-दुसरे के दुश्मन हो और तुम्हारे लिए ज़मीन में एक वक़्त तक ठिकाना और मआश (रोज़ी) मुक़र्रर कर दिया गया है। फिर आदम ने अपने परवरदिगार से कुछ कलिमात (बोल) सीखे (और माफी मांगी) तो उसने उनका कुसूर माफ कर दिया। बेशक वह माफ़ करने वाला (और) रहम वाला है। हमने फ़रमाया कि तुम सब यहाँ से उतर जाओ। जब तुम्हारे पास मेरी तरफ से हिदायत पहुँचे तो (उसकी पैरवी करना कि) जिन्होंने मेरी हिदायत की पैरवी की, उनको न कुछ ख़ौफ होगा और न वे ग़मनाक होंगे। और जिन्होंने (उसको) कुबूल न किया और हमारी आयतों को झुठलाया, वे दोज़ख में जाने वाले हैं (और) वे हमेशा उसमें रहेंगे। (अल् बकर: 30-39)

फिर जब लोगों में आपसी वैर हो गया, और वे सीधे पथ और सच्चे संदेश से दूर हो गये, तो ईशवर ने अपने रसूलों को भेजा, फिर लगातार रसूल अपने अपने संदेश लेकर आते रहे। उस ने तुम्हारे लिए दीन का वही रास्ता मुक़र्रर किया, जिस (के अपनाने) का नूह को हुक्म दिया था और जिस की (ऐ मुहम्मद 1) हम ने तुम्हारी तरफ़ वहत्य भेजी है और जिसका इब्राहीम और मूसा और ईसा को हुक्म दिया था, (वह यह) कि दीन को कायम रखना और उस में फूट न डालना। (अल् शूरा, 13)

ईशवर के नबी और रसूल इद्रीस (अलैहिसलाम) से लेकर नूह (अलैहिसलाम) तक, फिर इब्राहीम, इस्माईल, मूसा, ईसा और मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तक लगातार आते रहे। ईशवर ने इन सारे नबी और रसूलों के बारे में, और उनके किस्से वर्णन किया। हम यहाँ पर इन में से कुछ रसूलों के कुछ भाग लिखेंगे, इसलिए कि इन किस्सों में बुद्धिमान लोगों के लिए नसीहत है। ईशवर ने कहा उनके किस्से में अक्लमंदों के लिए सबक है। यह (खुरआन) ऐसी बात नहीं है जो (अपने दिल से) बनाली गयी हो, बल्कि जो किताबें इस से पहले (नाज़िल हुई) हैं, उन की तस्दीक (करने वाला) है और हर चीज़ की तफ़सील (करने वाला) और मोमिनों के लिए हिदायत और रहमत है। (सूरे यूसुफ, 111)



इन रसूलों में से एक:

1-नूह (अलैहि सलाम)-

आप की क़ौम पहले तो एक ईशवर पर विश्वास रखती थी, उसकी प्रार्थना करती थी, भविष्य जीवन का यकीन रखती थी और अच्छे कार्य करती थी। फिर इस क़ौम के लोगों का देहांत हो गया, ये लोग चरित्रवान और पवित्र थे, इसलिए लोगों को इनके देहांत पर बहुत दुख हुआ, तो लोगों ने इनकी मूर्तियाँ बनाली, जिनको वे यह नाम दिया करते थे: वूद, सुवा, यगूस, यऊख और नस्र। फिर लोगों को इन मूर्तियों से प्रेम हो गया, और लोगों ने इन मूर्तियों को अपने मृत चरित्रवान लोगों का चिह्न बना लिया। शहर वाले इन मूर्तियों को अधिकतम स्थान देने लगे, उनका लक्ष्य उन मृत चरित्रवान लोगों को सम्मान देना था। इसी प्रकार से कई वर्ष बीत गये, यहाँ तक कि बड़ों का देहांत हो गया और छोटे बड़े हो गये, फिर छोटों ने इन मूर्तियों की समानता को और बढ़ाया, उनके सामने झुकने लगे, और फिर ये मूर्तियाँ इस ख़ौम के दिलों में एक बड़ा स्थान बनाने लगीं। जब दूसरा वंशज शुरू हुआ तो ये लोग इन मूर्तियों की प्रार्थना करने लगे, और कहने लगे कि ये ईशवर हैं। जिनके सामने झुकना और सज्दा करना ज़रूरी है, परन्तु वे इन मूर्तियों की प्रार्थना करने लगे, और बहुत से लोग भटकने लगे।

इस जैसे समय में ईशवर ने इस ख़ौम के पास नूह को भेजा, ताकि वह उन्हें सीधे पथ की ओर निर्देश करे, मूर्ति पूजा से उन्हें रोके और एक ईशवर की प्रार्थना की ओर उन्हें बुलाये, परन्तु नूह अपने ख़ौम के पास आये उन्होंने उन से कहा कि ऐ ख़ौम। खुदा ही की इबादत करो, उसके सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं। (अल् मुमिनून, 23)

लेकिन इन लोगों ने नूह का इंकार किया, और उनकी एक बात भी स्वीकार नहीं की, तो नूह ने उन्हें डराया और ईशवर के दण्ड से चेतावनी दी, और कहा मुझ को तुम्हारे बारे में बड़े (सख्त) दिन के अज़ाब का डर है। (अल् शुअरा, 135)

तो इन लोगों ने कहा तो जो उन की क़ौम में सरदार थे, वे कहने लगे कि हम तुम्हें खुली गुमराही में (पड़े) देखते हैं। (अल् आराफ़, 60)

नूह ने उन्हें यह जवाब दिया उन्होंने ने कहा, ऐ क़ौम। मुझ में किसी तरह की गुमराही नहीं है, बल्कि मैं दुनिया के परवरदिगार का पैग़म्बर हूँ। तुम्हें अपने परवरदिगार के पैग़ाम पहुँचाता हूँ और तुम्हारी ख़ैर-ख़वाही करता हूँ और मुझ को खुदा की तरफ़ से ऐसी बातें मालूम हैं, जिन से तुम बे-ख़बर हो। (अल् आराफ़, 61-62)

तो नूह की बातों से उन की क़ौम ताज्जुब में पड़गयी और कहने लगी: आप तो हमारी तरह ही एक मानव है, तो आप ईशवर के रसूल कैसे हो सकते हैं? और जिन लोगों ने आपकी बातों का पालन किया है, वे सब दुर्जन हैं। फिर यह

कि तुम्हें हम से ज्यादा इज्जत नहीं है, परन्तु तुम लोग हम से अधिक न उच्च स्थिति वाले हैं और न धनी, और हमारा यह ख्याल है कि तुम लोग अपनी इन बातों में झूठे हो। और इस क्रौम के लोगों ने आपस में एक दूसरे से यह कहने लगे। कहने लगे कि यह तो तुम ही जैसा आदमी है, तुम पर बड़ाई हासिल करना चाहता है और खुदा चाहता तो फ़रिश्ते उतार देता। हम ने अपने अगले बाप-दादा में तो यह बात कभी सुनी नहीं। इस आदमी को जो दीवानगी (का मरज़) है। (अल मुमिन्न, 24-25)

इस क्रौम ने आपस में एक दूसरे को मूर्ति पूजा पर प्रोत्साहन किया। और कहने लगे कि अपने माबूदों को हरगिज़ न छोड़ना और वद्द और सुवाअ और यगूस और यऊक और नस्र को कभी न छोड़ना। (नूह, 23)

तो नूह ने उनसे कहा। क्या तुम को इस बात से ताज्जुब हुआ है कि तुम में से एक शख्स के हाथ तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से तुम्हारे पास नसीहत आयी ताकि वह तुमको डराये। (अल् आराफ, 63)

और नूह दयालुता और कोमल पक्ष अपनाते रहे, लेकिन उनकी क्रौम और जिद्दी (जिद्दी) बनती गयी, और नूह उन्हें हर समय बुलाते रहे, यहाँ तक कि उन्होंने कहा। जब लोगों ने माना, तो (नूह ने) खुदा से अर्ज की कि परवरदिगार। मैं अपनी क्रौम को रात-दिन बुलाता रहा, लेकिन मेरे बुलाने से वे और ज्यादा भागते रहे। जब-जब मैं ने उनको बुलाया कि (तौबा करें और) तू उन को माफ़ फ़रमाए, तो उन्होंने अपने कानों में उंगलियाँ देली और कपड़े ओढ़ लिए और अड़गये और अकड़ बैठे। (नूह, 5-7)

नूह ने उन्हें हर प्रकार से बुलाया। फिर मैं उनको खुले तौर पर भी बुलाता रहा, और खुले और छिपे हर तरह समझाता रहा और कहा कि अपने परवरदिगार से माफी माँगो कि वह बड़ा माफ करने वाला है। (नूह, 9-10)

इन में से कुछ लोगों ने मामूली-मामूली बहाने बना लिया और कहने लगे वे बोले कि क्या हम तुम को मानलें और तुम्हारी पैरवी करने वाले तो नीच लोग हुए हैं। (अल शुअरा, 111)

तो नूह ने उन्हें दयालुता और उपदेशा के स्वर में यह जवाब दिया (नूह ने) कहा कि मुझे क्या मालूम कि वे क्या करते हैं। (अल् शुअरा, 112)

नूह ने उनसे यह कहा उनका हिसाबे (आमाल) मेरे परवरदिगार के जिम्मे है, काश। तुम समझो। (अल् शुअरा, 113)

नूह ने उनसे यह भी कहा और मैं मोमिनों को निकाल देने वाला नहीं हूँ। (अल् शुअरा, 114) और जो लोग ईमान लाए हैं, मैं उन को निकालने वाला भी नहीं हूँ। (हूद, 29)

कैसे मैं उस समूह को अपने आप से दूर करदूँ जो मुझ पर विश्वास रखते हैं, मेरी मदद करते हैं और मेरे संदेश को फैलाने में मेरी सहायता करते हैं? फिर उनसे कहा। और ऐ मेरी क्रौम के लोगों। अगर मैं उनको निकाल दूँ तो खुदा (के अज़ाब) से (बचाने के लिए) कैसा मेरी मदद कर सकता है? भला तुम गौर क्यों नहीं करते? (हूद, 30) मैं तो सिर्फ़ खोल-खोल कर नसीहत करने वाला हूँ। (अल् शुअरा, 115)

गोरे-काले, छोटे-बड़े, धनी-निर्धन और इज्जतदार-बेइज्जतदार के बीच कोई अंतर किये बिना सारे लोगों को चेतावनी देते रहे, और जब लोगों के पास कोई सबूत न रहा, वे नूह की बातों का जवाब न दे सकें, तो लोगों ने नूह को पत्थरों से मार कर हत्या कर देने की धमकी दी। उन्होंने कहा कि नूह अगर तुम मानोगे नहीं तो पत्थर मार-मार कर हलाक कर दिये जाओगे। (अल् शुअरा, 116)

जब नूह को यह विश्वास गो गया कि यह लोग न बात सुनेंगे और न सीधे पथ पर चलेंगे, तो नूह ने ईश्वर से यह प्रार्थना की कि वे उसको इस जिद्दी क्रौम से सुरक्षित रखे। (नूह ने) कहा कि परवरदिगार मेरी क्रौम ने तो मुझ को झुठला दिया। सो तू मेरे और उन के दर्मियान एक खुला फैसला करदे और मुझे और जो मोमिन मेरे साथ हैं, उन को बचाले। (अल् शुअरा, 117-118)

नूह अपनी क्रौम को इस बात से डराते थे कि अगर वे बेईमानी (कुफ़्र) पर डटे रहे तो उनको ईश्वर की ओर से दण्ड दिया जायेगा, तो इनकी क्रौम के कुछ लोगों ने परिहास करते हुए यह कहा लेकिन अगर सच्चे हो तो जिस चीज़ से हमें डराते हो, वह हम पर ला नाज़िल करो। (हूद, 32)

तो नूह ने कहा कि यह मेरे वश की बात नहीं नूह ने कहा कि इस को तो खुदा ही चाहेगा, तो नाज़िल करेगा। (हूद 33) और अगर मैं यह चाहूँ कि तुम्हारी ख़ैरखाही करूँ और खुदा यह चाहे कि तुम्हें गुमराह करे, तो मेरी ख़ैरखाही तुम को कुछ फ़ायदा नहीं दे सकती। (हूद, 34)



निष्कर्ष संदेश

मुहम्मद (स) वो रसूल है जो इस्लाम लेकर आये। इस प्रकार से आप उन सारे रसूलों की आखिरी कड़ी हैं जो महत्वपूर्ण संदेश लेकर आये हैं।

वोल्फ बारुन अहर नज़ीर

आस्ट्रिया विश्व विद्यालय का प्रोफेसर

तो ईश्वर ने नूह से यह कहा तुम्हारी कौम में जो लोग ईमान ला चुके, उनके सिवा और कोई ईमान नहीं लाएगा, तो जो काम ये कर रहे हैं, उन की वजह से गम न खाओ। (हूद, 36)

इस प्रकार से सबूत पूरे हो गये, बहानों का रास्ता बंद हो गया, और लगभग एक हजार वर्ष तक संदेश का सिलसिला चलता रहा, यहाँ तक कि नूह अपनी कौम से निराश होगये, और ईश्वर से प्रार्थना करते हुए यह कहा। और (फिर)

नूह ने (यह) दुआ की कि मेरे परवरदिगार किसी काफ़िर को धरती पर बसता न रहने दे। अगर तू उनको रहने देगा, तो मेरे बन्दों को गुमराह करेंगे और उनसे जो औलाद होगी वह भी बद-कार और ना-शुक्रगुज़ार होगी। (नूह, 26-27)

तो अल्लाह ने नूह को कश्ती बनाने का आदेश दिया हम ने उन की तरफ़ व्हय भेजी है कि हमारे सामने और हमारे हुक्म से एक कश्ती बनाओ। (नूह, 27)

नूह ने कश्ती बनाना प्रारंभ कर दिया। तो नूह ने कश्ती बनानी शुरू कर दी और जब उनकी कौम के सरदार उनके पास से गुजरते तो उनका मज़ाक उड़ाते। (हूद, 38)

तो नूह उन्हें बड़े प्यार और नमी से यह जवाब देते।

तो जिस तरह तुम हमारा मज़ाक उड़ाते हो, उसी तरह (एक वक़्त) हम भी तुम्हारा मज़ाक उड़ाएँगे। (हूद, 38)

फिर नूह ने उन्हें धमकाया और ईश्वर से डराया और तुमको जल्द मालूम हो जाएगा कि किस पर अज़ाब आता है, जो उसे रुसवा करेगा और किस पर हमेशा का अज़ाब नाज़िल होता है? (हूद, 39)

नूह बड़ी मेहनत के साथ काम करने लगे, यहाँ तक कि कश्ती पूरी बनगयी। फिर ईश्वर ने नूह को यह आदेश दिया

कि वह ईमान वालों को और हर प्राणी में से एक एक जोड़े को अपने साथ कश्ती में बिठा ले यहाँ तक कि जब हमारा आदेश आजाय और तंदूर उबल पड़े तो हम कहेंगे, हर जाति में से दो-दो के जोड़े उसमें चढ़ालो और अपने घरवालों को भी

सिवाय ऐसे व्यक्ति के जिसके बारे में बात तय पा-चुकी है और जो ईमान लाया हो उसे भी। किन्तु उसके साथ जो ईमान लाये थे, वे बहुत थोड़े थे। (हूद, 40)

तो नूह ने ईमान वालों को और हर प्राणी में से एक-एक जोड़े को अपने साथ कश्ती में सवार कर लिया। उसने कहा, उसमें सवार हो जाओ। अल्लाह के नाम से इसका चलना भी है और इसका ठहरना भी निस्संदेह मेरा रब अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है। (हूद, 41)

जब नूह ईमान वालों और जानवरों को लेकर कश्ती में सवार हो गये, और हर एक अपनी-अपनी जगह बैठ गया, तो जोरदार बारिश होने लगी, और ज़मीन के अंदर से बहुत ज्यादा पानी निकलने लगा। तब हमने मूसलाधार बरसाते हुए पानी से आकाश के द्वार खोल दिए और धरती को प्रवाहित स्रोतों में परिवर्तित कर दिया और सारा पानी उस काम के लिए मिलगया जो नियत हो चुका था। और हमने उसे एक तख़्तों और कीलोंवाली (नौका) पर सवार किया जो हमारी निगाहों के सामने चल रही थी। यह बदला था उस व्यक्ति के लिए जिसकी कद्र नहीं की गई। (अल क़सर, 11-14)

नूह अपने उस पुत्र को देखते रहे जो उन पर ईमान नहीं लाया, और डूब जाने के डर से भागने का प्रयास कर रहा था, तो नूह ने उसको आवाज़ दी नूह ने अपने बेटे को जो उससे अलग था, पुकारा, ऐ मेरे बेटे। हमारे साथ सवार हो जा। तू इनकार करनेवालों के साथ न रह। (हूद, 42)

लेकिन पुत्र ने ईमान लाने से और अपने पिता की नसीहत सुनने से इंकार किया। और अपने पिता नूह से यह कहा उसने कहा मैं किसी पहाड़ से जा लूँगा जो मुझे पानी से बचालेगा। (हूद, 43)

नूह अपने पुत्र की ओर प्रेम से देख रहे थे और यह कह रहे थे। आज अल्लाह के आदेश (फ़ैसले) से कोई बचाने वाला नहीं है (अतः कोई बच नहीं सकता) सिवाय उसके जिसपर वह दया करे। (हूद, 43)

बस कुछ ही क्षण बीते थे कि इतने में दोनों के बीच लहर आ पड़ी और डूबनेवालों के साथ वह भी डूब गया। (हूद, 43)

नूह को अपने पुत्र पर तरस आया, तो वह उसकी मुक्ति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करने लगे, क्योंकि ईश्वर ने नूह से उनके परिवार वालों को मुक्ति देने का वादा किया था, परन्तु नूह ने कहा नूह ने अपने रब को पुकारा और कहा मेरे रब! मेरा बेटा मेरे घरवालों में से है और निस्संदेह तेरा वादा सच्चा है और तू सबसे बड़ा हाकिम भी है। (हूद, 45)

तो ईश्वर ने जो कि नूह के सदाचरण परिवार वालों को मुक्ति देने का वादा किया था, यह कहते हुए उत्तर दिया ऐ नूह। वह तेरे घरवालों में से नहीं। व तो सर्वथा एक बिगड़ा काम है। (हूद, 46)

घमंड और इतिहास का विरूपण

मध्य युग में ईसाई अपनी किताबों के अंदर संफर तक्वीन के अनुसार मानव स्थर की जाति वितरण पर संतुष्ट किया। फिर इस वितरण में एक और कड़ी जोड़ दी। ये विश्वास लोक प्रिय हो गया के धर्मिक और संत साम की वंश से हैं। शूरवीर याफ़स की वंश से हैं। और गरीब और निर्धनीय हाम की वंश से हैं (जो नूह की संतान हैं) 1964 में पश्चिम वर्जीनिया के अमेरिकन सेनेटर रॉबर्ट बर्ड ने नूह की जीवन चरित्र क अमेरिका के अंदर जाति-भेद की निती बाखी रहने का कारण माना है।



धर्म में कोई दलाली नहीं है, परन्तु वह आपके परिवार का सदस्य नहीं है, और जब तक वह एक ईश्वर पर ईमान नहीं लायेगा, तो केवल आपका पुत्र होना ही उसके लिए कोई लाभ की बात नहीं होगी। जब पानी से सारी पृथ्वी डूब गयी और सारे काफिर विनाश हो गये। और कहा गया, ऐ धरती ! अपना पानी निगल जा । (हूद, 44)

परन्तु ज़मीन से निकलने वाला पानी बंद हो गया, और आकाश को यह आदेश दिया गया और ऐ आकाश ! तू थम जा । (हूद, 44)

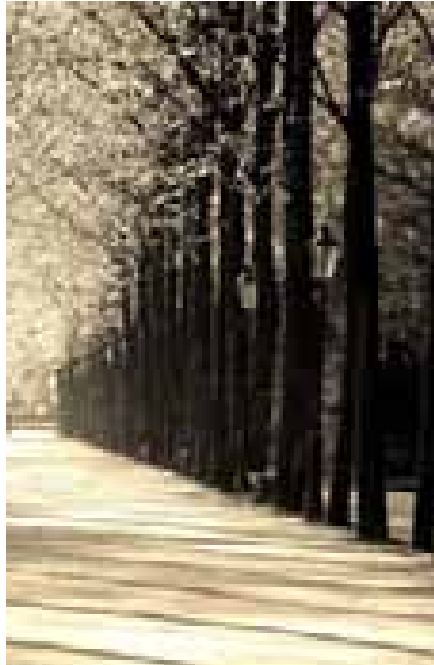
परन्तु आकाश बरसने से रुक गया, और बारिश थम गयी । और वह (नाव) जूदी पर्वत पर टिक गई । (हूद, 44)

यह वह पहाड़ है जिस पर नाव टिकी थी । नूह को यह आदेश दिया गया । कहा गया, ऐ नूह ! हमारी ओर से सलामती और उन बरकतों के साथ उतर, जो तुझपर और उन गिरोहों पर होगी, जो तेरे साथ वालों में से होंगे । (हूद, 48)

नूह और उनके साथी ईमान वाले कश्ती से उतर गये, इन लोगों ने एक नगर बसाया, पौधे लगाये, अपने साथ लाये हुए जानवरों को छोड़ दिया, इस प्रकार से पृथ्वी में विकास होने लगा और लोग पौढ़ी-पीढ़ी के बाद बढते गये ।

नबियों कि शान में अल्पिकरण

नूह (अलैहीसलाम) ने खेति-बाड़ी की और आपने कुछ पौधे बोये जिससे अंगूर पैदा हुआ, आपने उससे नशेली चीज बनाई, उसको पी लिया और नशे में आगये। आपका छोटा पुत्र हाम ने भी इस नशे का प्रयोग किया और अपने कपडे निकाल दिये। परन्तु हाम के दो भायं ने अपने पिता पर चादर डाली। जब नूह को होश आया और हाम की प्रतिक्रिया को आप को जान हुआ तो अपने कनान इब्ने हाम को बुरा-भला कहा और ये कहा के ये अपने भायों का सेवक रहेगा, साम और याफिस को भलाई का अशिर्वाद दिया। (सफर तक्वीन 10 व पाठ) इस अनुध्वेद के विवरण में (सन्ह द्रेन पेज नं 70) तलमूद बाब्ली ने ये लिखा है के कनान या हाम ने नूह का बधियाकरण किया और उनके साथ बुरा व्यवहार किया। इन सब बातों से अल्लाह के नबी पाक है।



2. इब्राहीम (अलैहिसलाम)

इब्राहीम एकीकरण के रसूल है, जो उनकी जीवन शैली से मालूम होता है, इसी कारण ईश्वर ने उनके बारे में यह कहा । निश्चय ही इब्राहीम की स्थिति एक समुदाय की थी । वह अल्लाह का आज्ञाकारी और उसकी ओर एकाग्र था। (अल-नहल, 120)

इब्राहीम (अलैहिसलाम) का पालन-पोषण ईश्वर का भागीदार माननेवालों के बीच में हुआ, बल्कि आप के पिता भी मूर्ति पूजा, मूर्ति बनाने वाले और उसकी सेवा करने वाले थे, तो इब्राहीम ने अपने पिता और क्रौम से बहस किया । और याद करो जब इब्राहीम ने अपने बाप आजर से कहा था, क्या तुम मूर्तियों को पूज्य बनाते हो । मैं तो तुम्हें और तुम्हारी क्रौम को खुली गुमराही में पड़ा देख रहा हूँ । (अल-अनआम, 74)

इब्राहीम ने अपने क्रौम के सामने मज़बूत सबूतों के साथ ईश्वर के भागीदार मानने का इंकार किया, और वह अल्लाह की निशानियों में विचार किया करते हैं । अतएव जब रात उस पर छा गई तो उसने एक तारा देखा । उसने कहा, इसे मेरा रब टहराते हो । फिर जब वह छिप गया । (अल-अनआम, 76)

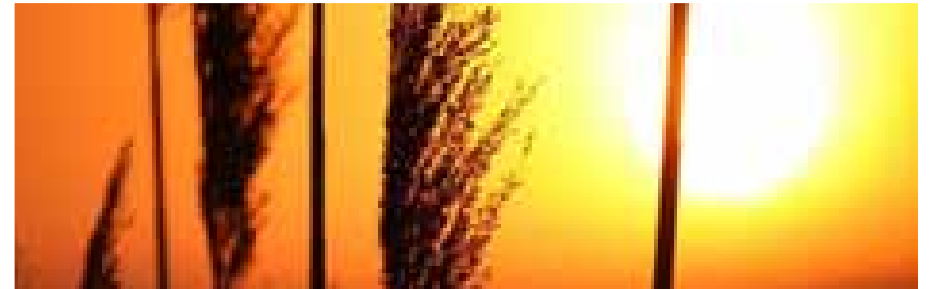
यानी तारा डूब गया । तो बोला, छिप जानेवालों से मैं प्रेम नहीं करता, फिर जब उसने चाँद को चमकता हुआ देखा (अल-अनआम, 76-77)

यानी आसमान में निकलता हुआ देखा, और यह भी देखा कि कुछ लोग इसकी पूजा करते हैं । तो कहा, इसको मेरा रब टहराते हो । (अल-अनआम, 77)

उनके इस कार्य का इंकार करते हुए उनकी प्रार्थना को आश्चर्य करते हुए और समय का फाइदा उठाते हुए । फिर जब वह छिप गया । (अल-अनआम, 77)

यानी जब चाँद बादलों में छिप गया, तो उन्होंने ने अपनी क्रौम से यह कहा तो कहा यदि मेरा रब मुझे मार्ग न दिखता तो मैं भी पथभ्रष्ट लोगों में सम्मिलित हो जाता फिर जब उसने सूर्य को चमकता हुआ देखा । (अल-अनआम, 77-78)

और यह देखा कि उनकी क्रौम सूरज के सामने झुकती है । तो कहा इसे मेरा रब टहराते हो। यह तो बहुत बड़ा है। (अल-अनआम, 78)



उनके कार्य का इंकार करते हुए और इस बात से आश्चर्य होते हुए कि कैसे यह लोग सूर्य की प्रार्थना करते हैं ? फिर जब वह भी छिप गया (अल-अनआम, 78)

और निगाहों से दूर हो गया, तो इब्राहीम ने सूर्य की प्रार्थना करने वालों की ओर मुड़कर यह कहा । ऐ मेरी कौम के लोगों । मैं विरक्त हूँ उनसे जिनको तुम साझी ठहराते हो । मैंने तो एकाग्र होकर अपना मुख उसकी ओर करलिया है जिसने आकाशों और धरती को पैदा किया । और मैं साझी ठहराने वालों में से नहीं । (अल-अनआम, 78-79)

इब्राहीम अपने बाप को बहुत ही ज्यादा समझाते थे, नमी, प्रेम और विनम्र के साथ उनको ईश्वर का साझी ठहराने से रोकते थे । ऐ मेरे बाप । आप उस चीज़ को क्यों पूजते हैं जो न सुने, न देखे और न आप को कुछ काम आए ? ऐ मेरे बाप । मेरे पास ऐसा ज्ञान आगया है जो आप के पास नहीं आया । अतः आप मेरा अनुसरण करें, मैं आपको सीधा मार्ग दिखाऊँगा । ऐ मेरे बाप । शैतान की बन्दगी न कीजिए । शैतान तो रहमान (करूणामय प्रभु) का अवज्ञाकारी है। ऐ मेरे बाप । मैं डरता हूँ कि कहीं आपको रहमान की कोई यातना न आ पकड़े। (मरयम, 42-45)

अफसोस आप के बाप का उत्तर कठिन था । उसने कहा ऐ इब्राहीम क्या तू मेरे उपास्यों से फिर गया है ? यदि तू बाज़ ना आया तो मैं तुझपर पथराव करदूँगा । तू अलग होजा मुझसे एक लम्बी मुद्दत के लिए। (मरयम, 46)

तो इब्राहीम ने प्रेम और विनम्र से यह जवाब दिया । (इब्राहीम ने) कहा, सलाम है आपको । मैं आपके लिए अपने रब से क्षमा की प्रार्थना करूँगा । वह मुझ पर बहुत मेहरबान है। मैं आप लोगों को छोड़ता हूँ और आपको भी जिन्हें अल्लाह से हटकर आप लोग पुकारा करते हैं। मैं तो अपने रब ही को पुकारूँगा । आशा है कि मैं अपने रब को पुकार कर बेनसीब नहीं रहूँगा । (मरयम, 47-48)

इब्राहीम लगातार अपने बाप और कौम को ईश्वर के एकीकरण और उसके साझीदार न मानने की ओर बनाते रहे, लेकिन कौम ने उनके संदेश को नहीं माना और ईश्वर के साथ किसी और को साझीदार मानने पर डटे रहे । उसकी कौम के लोग उससे झगड़ने लगे। उसने कहा, क्या तुम मुझसे अल्लाह के विषय में झगड़ते हो ? जब कि उसने मुझे मार्ग दिखा दिया है। मैं उससे नहीं डरता जिन्हें तुम उसका सहभागी ठहराते हो, बल्कि मेरा रब जो कुछ चाहता है वही पूरा होकर रहता है। किसी वस्तु मेरे रब की ज्ञान-परिधि के भीतर है। फिर क्या तुम चेतोगे नहीं ? और मैं तुम्हारे ठहराए हुए साझीदारों से कैसे डरूँ, जब कि तुम इस बात से नहीं डरते कि तुमने अल्लाह का सहभागी उस चीज़ को ठहराया है जिसका उसने तुम पर कोई प्रमाण अवतरित नहीं किया ? (अल-अनआम, 80-81)

फिर एक बार इब्राहीम (अब्राहम) ने अपने कौम से यह कहा । जब कि उसने अपने बाप और अपनी कौम के लोगों से कहा, तुम क्या पूजते हो ? (अल-शुअरा, 70)

तो उनकी कौम ने यह जवाब दिया उन्होंने ने कहा हम बुतों की पूजा करते हैं, हम तो उन्हीं की सेवा में लगे रहेंगे। उसने कहा, क्या ये तुम्हारी सुनते हैं जब तुम पुकारते हो ? या ये तुम्हें कुछ लाभ या हानि पहुँचाते हैं ? (अल-शुअरा, 72-73)

तो बुद्धि और तर्क से हटकर केवल संप्रदायों के अनुसरण पर आधारित उनका न समझ उतर यह था । उन्होंने कहा, नहीं बल्कि हम ने तो अपने बाप-दादा को ऐसा ही करते पाया है। (अल-शुअरा, 74)

तो इब्राहीम ने बुद्धिमत्ता, दूरदर्शिता, दृढ़-सबूत के द्वारा ईश्वर के एकीकरण के सिद्धांत के साथ यह जवाब दिया । उसने कहा, क्या तुमने उनपर विचार भी किया जिन्हें तुम पूजते हो, तुम और तुम्हारे पहले के बाप-दादा भी ? वे सब तो मेरे शत्रु हैं सिवाय सारे संसार के रब के जिसने मुझे पैदा किया और फिर वही मेरा मार्गदर्शन करता है। और वही है जो मुझे खिलाता और पिलाता है। और जब मैं बीमार होता हूँ तो वही मुझे अच्छा करता है। और वही है जो मुझे मारेगा, फिर मुझे जीवित करेगा। और वही है जिससे मुझे इसकी आशा है कि बदला दिए जाने के दिन वह मेरी खता माफ करदेगा । ऐ मेरे रब। मुझे निर्णय-शक्ति प्रदान कर और मुझे नेक (भले) लोगों के साथ मिला। और बाद के आनेवालों में मुझे सच्ची ख़्वालि प्रदान कर । और मुझे नेमतों भरी जन्नत के वारिसों में सम्मिलित कर । और मेरे बाप को क्षमा कर दे। निश्चय ही वह पथभ्रष्ट लोगों में से है। (अल-शुअरा, 75-86)

जब क्रौम के पर्व का समय था, तो राजा और प्रजा पर्व के समारोह के लिए जंगल की ओर निकले लेकिन इब्राहीम उनके साथ नहीं गये। अतएव वे उसे छोड़कर चले गए, पीठ फेरकर। फिर वह आँख बचाकर उनके देवताओं की ओर गया और कहा, क्या तुम खाते नहीं? तुम्हें क्या हुआ है कि तुम बोलते नहीं फिर वह भरपूर हाथ मारते हुए उन पर पिल पड़ा। (अल-साफ़ात, 90-93)

जब वे वापस लौटे और अपनी मूर्तियों को टुकड़े-टुकड़े पाया। यह कैसे संभव है कि ये मूर्तियाँ ईश्वर हों और वे अपने आप की रक्षा न कर सकते हों? यह लोग दौड़ते हुए आए।

वे कहने लगे, किसने हमारे देवताओं के साथ यह हरकत की है? निश्चय ही वह कोई ज़ालिम है। (कुछ लोग) बोले, हमने एक नवयुवक को, जिसे इब्राहीम कहते हैं, उनके विषय में कुछ कहते सुना हैं। उन्होंने कहा, तो उसे ले आओ लोगों की आँखों के सामने कि वे भी गवाह रहें। उन्होंने कहा क्या तूने हमारे देवों के साथ यह हरकत की है, ऐ इब्राहीम। (अल-अम्बिया, 59-62)

तो इब्राहीम ने उनको मुँह तोड़ जवाब दिया।

उसने कहा, नहीं बल्कि उनके इस बड़े-ने की होगी उन्हीं से पूछ लो, यदि वे बोलते हों। (अल-अम्बिया, 63)

इस जवाब के सामने वे अपने आप को निम्न समझने लगे। तब वे अपनी ओर पलटे और कहने लगे, वास्तव में ज़ालिम तो तुम्हीं लोग हो। किन्तु फिर वे बिलकुल आँधे हो रहे। (फिर बोले) तुझे तो मालूम है कि ये बोलते नहीं। (अल-अम्बिया, 64-65)

तो इब्राहीम ने उन्हें एक और मुँह तोड़ जवाब दिया। उसने कहा फिर क्या तुम अल्लाह से हटकर उसे पूजते हो जो न तुम्हें कुछ लाभ पहुँचा सके और न तुम्हें कोई हानि पहुँचा सके? धिक्कार है तुम पर, और उनपर भी जिनको तुम



अल्लाह को छोड़कर पूजते हो। तो क्या तुम बुद्धि से काम नहीं लेते? (अल-अम्बिया, 66-67)

जब वे बुद्धिमत्ता, सबूत और तर्क खो बैठे, तो इब्राहीम से बदला लेना चाहा। उन्होंने कहा, जला दो उसे और सहायक हो अपने देवताओं के यदि तुम्हें कुछ करना है। (अल-अम्बिया, 68)

परन्तु ईश्वर ने इब्राहीम को बचा लिया।

हमने कहा, ऐ आग ठंडी हो जा और सलामती बन जा इब्राहीम पर। उन्होंने उसके साथ एक चाल चलनी चाही किन्तु हमने उन्हीं को घाटे में डाल दिया। (अल-अम्बिया, 69-70)

जब ईश्वर ने इब्राहीम को बचा लिया, तो इब्राहीम फिर से अपने क्रौम के राजा से बहस करने पहुँच गये। क्या तुमने उसको नहीं देखा जिसने इब्राहीम से उसके रब के सिलसिले में झगड़ा

किया था, इस कारण कि अल्लाह ने उसे राज्य दे रखा था? जब इब्राहीम ने कहा, मेरा रब वह है जो जिलाता और मारता है। (अल-बकरा, 258)

इस सीधे मुँह-तोड़ जवाब के सामने उन्हें यह न समझ जवाब मिला। उसने कहा, मैं भी तो जिलाता और मारता हूँ। (अल-बकरा, 258)

इब्राहीम ने इस बेकार जवाब और परस्पर संवाद से निकलते हुए यह बहस नहीं की, वह भी किसी व्यक्ति को मार सकते हैं या छोड़ सकते हैं। इब्राहीम ने कहा, अच्छा तो अल्लाह सूर्य को पूरब से लाता है, तो तू उसे पश्चिम से ले आ। इस पर वह विधर्मी चकित रह गया। अल्लाह ज़ालिम लोगों को सीधा मार्ग नहीं दिखाता। (अल-बकरा, 258)

इस प्रकार से उनके सबूत और तर्क की कमज़ोरी सामने आयी। फिर परस्पर संवाद के बाद इब्राहीम अपने आँखों से ईश्वर के जिलाने और मारने की शक्ति को देखे। और याद करो जब इब्राहीम ने कहा, ऐ मेरे रब। मुझे दिखा दे, तू

मुर्दों को कैसे जीवित करेगा? (रब ने) कहा, क्या तुझे विश्वास नहीं? उसने कहा, क्यों नहीं, किन्तु यह निवेदन इसलिए है कि मेरा दिल संतुष्ट हो जाए। (रब ने) कहा, अच्छा, तो चार पक्षी ले, फिर उन्हें अपने साथ भली-भाँति हिला-मिला ले, फिर उनमें से प्रत्येक को एक-एक पर्वत पर रखदे, फिर उनको पुकार, वे तेरे पास लपक्कर आएँगे। और जानले कि अल्लाह अत्यंत प्रभुत्वशाली, तत्त्वदर्शी है। (अल-बकरा, 260)

ईश्वर ने इब्राहीम और उनके पुत्र इसमाईल को मक्का मुकर्रम: में अपने घर से मूर्तियों को निकालकर पवित्र बनाने का आदेश दिया। और याद करो जब हमने इस घर (काबा) को लोगों के लिए केन्द्र और शान्ति स्थल बनाया और, इब्राहीम के स्थान में से किसी जगह को नमाज़ की जगह बना लो। और इब्राहीम और इसमाईल को जिम्मेदार बनाया कि तुम मेरे इस घर को तवाफ़ करनेवालों और एतिकाफ़ करनेवालों के लिए और रूकूअ और सजदा करनेवालों के लिए पाक-साफ़ रखो। और याद करो जब इब्राहीम ने कहा, ऐ मेरे रब। इसे शान्तिमय भू-भाग बनादे और इसके उन निवासियों को फलों की रोज़ी दे जो उनमें से अल्लाह और अन्तिम दिन पर ईमान लाए। (रब ने) कहा और जो इनकार करेगा थोड़ा फ़ायदा तो उसे भी दूँगा, फिर उसे घसीटकर आग की यातना की ओर पहुँचा दूँगा, और वह बहुत ही बुरा ठिकाना है। और याद करो जब इब्राहीम और इसमाईल इस घर की बुनियादें उठा रहे थे (तो उन्होंने ने प्रार्थना की), ऐ हमारे रब। हमारी ओर से इसे स्वीकार करले, निस्संदेह तू सुनता-जानता है। ऐ हमारे रब। हम दोनों को अपना आज्ञाकारी बना और हमारी संतान में से अपना एक आज्ञाकारी समुदाय बना और हमें हमारी इबादत के तरीके बता और हमारी तौबा क़बूल कर। निस्संदेह तू तौबा क़बूल करनेवाला, अत्यन्त दयावान है। (अल बकर: 125-128)



फिलस्थीन के शहर खलील में इब्राहीम की मसजिद इब्राहीम

3. मूसा अलैहिसलाम

बनी इस्राईल आपस में इब्राहीम अलैहि सलाम से चली आयी हुई बातों की चर्चा किया करते थे कि उनके संतान में एक लड़का पैदा होगा, जिसके हाथों पर इजीप्ट के राजा का विनाश होगा। यह खबर बनी इस्राईल के बीच प्रसिद्ध थी। इजीप्ट के राजा के सामने उसके कुछ मंत्रियों ने इसका चर्चा किया, तो उसी समय इस लड़के के पैदा होने के डर से राजा (फिरऔन) ने बनी इस्राईल के सारे नवजात लड़कों की हत्या करने का आदेश दिया। राजा के जुल्म और अन्याय से बनी इस्राईल का जीवन गुज़र रहा था। निस्संदेह फिरऔन ने धरती में सकरशी की और उसके निवासियों को विभिन्न गिरोहों में विभक्त कर दिया। उनमें से एक गिरोह को कमज़ोर कर रखा था। वह उनके बेटों की हत्या करता और चाहता था कि उनकी स्त्रियाँ जीवित रहें। निश्चय ही वह बिगाड़ पैदा करनेवालों में से था। (अल-क़सस, 4)

तो ईश्वर ने बनी इस्राईल के कमज़ोरों पर उपकार करने का निर्णय लिया और हम यह चाहते थे कि उन लोगों पर उपकार करें जो धरती में कमज़ोर पड़े थे और उन्हें नायक बनाएँ और उन्हीं को वारिस बनाएँ। और धरती में उन्हें सत्ताधिकार प्रदान करें और उनकी ओर से फिरऔन और हामान और उनकी सेनाओं को वह कुछ दिखाएँ जिसकी उन्हें आशंका थी। (अल-क़सस, 5-6)

हालांकि फिरऔन ने मूसा का जन्म न होने के लिए पूरी तरह एहतियात किया था, परन्तु उसने गर्भवती महिलाओं पर सुरक्षा कर्मियों को तैनात कर दिया था, जो उनके गर्भकाल के समय का ज्ञान रखते थे, और जो भी महिला लड़के को जन्म देती थी, तो ये दरिंदे उसी समय लड़के की हत्या कर देते थे, लेकिन ईश्वर ने फिरऔन, हामान और उसकी सेना को उसी विषय से पीड़ित करना चाहा जिससे वह लोग डरते थे। जब मूसा की माँ ने जन्म दिया हमने मूसा की माँ को संकेत किया, उसे दूध पिला। फिर जब तुझे उसके विषय में भय हो तो उसे दरिया में डाल दे और न तुझे कोई भय हो और न तू शोकाकुल हो। हम उसे तेरे पास लौटा लाएँगे और उसे रसूल बनाएँगे। (अल-क़सस, 7)

मूसा की माँ अपने बच्चे के बारे में सौंच सौंच कर भयभीत हो गयी, परन्तु उसने बच्चे को डिब्बे में रख दिया और समुद्र में फेंक दिया।

अन्ततः फिरऔन के लोगों ने उसे उठा लिया ताकि परिणाम स्वरूप वह उनका शत्रु और उनके लिए दुख का कारण बने । निश्चय ही फिरऔन और हामान और उनकी सेनाओं से बड़ी चूक हुई । (अल-कसस, 8)

फिरऔन की पत्नी के मन में मूसा के प्रति प्रेम उत्पन्न हुआ फिरऔन की स्त्री ने कहा कि यह मेरी और तुम्हारी आँखों की ठण्डक है। इसकी हत्या न करो, कदाचित्त यह हमें लाभ पहुँचाए या हम इसे अपना बेटा ही बना लें । और वे (परिणाम से) बेखबर थे। (अल-कसस, 9)

जहाँ तक मूसा की माँ की स्थिति का सवाल था, तो

और मूसा की माँ का हृदय परिशून्य हो गया । निकट था कि वह उसको प्रकट करदेती, यदि हम उसके दिल को इस ध्येय से न संभालते कि वह मोमिनों में से हो। उसने उसकी बहन से कहा कि तू उसके पीछे-पीछे जा। अतएव वह उसे दूर ही दूर से देखती रही, और वे महसूस नहीं कर रहे थे। हमने पहले ही से दूध पिलानेवालों को उसपर हराम कर दिया। अतः उसने (मूसा की बहन ने) कहा, क्या मैं तुम्हें ऐसे घरवालों का पता बताऊँ जो तुम्हारे लिए इसके पालन-पोषण का ज़िम्मा लें और इसके शुभ-चिंतक हों । इस प्रकार हम उसे उसकी माँ के पास लौट लाए, ताकि उसकी आँख ठण्डी हो और वह शोकाकुल न हो, और ताकि वह जानले कि अल्लाह का वादा सच्चा

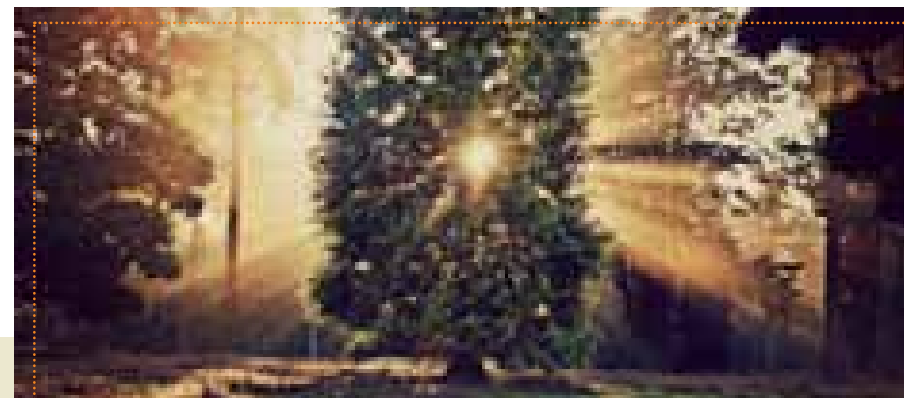
है, किन्तु उनमें से अधिकतर लोग जानते नहीं। (अल-कसस, 10-13)

मूसा का पालन-पोषण तानाशाह फिरऔन के घर में हुआ और जब वह अपनी जवानी को पहुँचा और भरपूर हो गया तो हमने उसे निर्णय-शक्ति और ज्ञान प्रदान किया । और सुकर्मियों लोगों को हम इसी प्रकार बदला देते हैं । उसने नगर में ऐसे समय प्रवेश किया जबकि वहाँ के लोग बेखबर थे। उसने कहा दो आदमियों को लड़ते पाया । यह उसके अपने गिरोह का था और यह उसके शत्रुओं में से था । जो उसके गिरोह में से था उसने उसके मुकाबिले में, जो उसके शत्रुओं में से था, सहायता के लिए उसे पुकारा। मूसा ने उसे घूँसा मारा और उसका काम तमाम करदिया । कहा, यह शैतान की कार्रवाई है। निश्चय ही वह खुला पथभ्रष्ट करनेवाला शत्रु है। उसने कहा, ऐ मेरे रब, मैंने अपने आप पर जुल्म किया

। अतः तू मुझे क्षमा कर दे । अतएव उसने उसे क्षमा कर दिया। निश्चय ही वह बड़ा क्षमाशील, अत्यन्त दयावान है। उसने कहा, ऐ मेरे रब। जैसे तूने मुझे पर अनुकम्पा दर्शाई है, अब मैं भी कभी अपराधियों का सहायक नहीं बनूँगा। (अल-कसस, 14-17)

लेकिन जब मूसा ने अपने और इस्राईली के दुश्मन की हत्या कर दी फिर दूसरे दिन वह नगर में डरता, टोह लेता हुआ प्रविष्ट हुआ । इतने में अचानक क्या देखता है कि वही व्यक्ति जिसने कल उससे सहायता चाही थी, उसे पुकार रहा है। मूसा ने उससे कहा, तू तो प्रत्यक्ष बहका हुआ व्यक्ति है। फिर जब उसने इरादा किया कि उस व्यक्ति को पकड़े, जो उन दोनों का शत्रु था, तो वह बोल उठा, ऐ मूसा, क्या तू चाहता है कि मुझे मार डाले, जिस प्रकार तूने कल एक व्यक्ति को मार डाला? धरती में बस तू निर्दय अत्याचारी बनकर रहना चाहता है और यह नहीं चाहता कि सुधार करने वाला हो। इसके बाद एक आदमी नगर के परले सिरे से दौड़ता हुआ आया । उसने कहा, ऐ मूसा, सरदार तेरे विषय में परामर्श कर रहे हैं कि तुझे मार डालें। अतः तू निकल जा। मैं तेरा हितैषी हूँ। फिर वह वहाँ से डरता और खतरा भाँपता हुआ निकल खड़ा हुआ । उसने कहा, ऐ मेरे रब। मुझे ज़ालिम लोगों से छुटकारा दे। (अल-कसस, 18-21)

मूसा “ईजिप्ट” से निकल कर “मदयन” की ओर निकल पड़े । जब उसने “मदयन” का रुख किया तो कहा, आशा है, मेरा रब मुझे ठीक रास्ते पर डाल देगा । और जब वह मदयन के पानी (कुएँ) पर पहुँचा तो उसने उसपर पानी पिलाते लोगों का एक गिरोह पाया । और उनसे हटाकर एक ओर दो स्त्रियों को पाया जो अपने जानवरों को रोक रही थी। उसने कहा, तुम्हारा क्या मामला है ? उन्होंने कहा, हम उस समय तक पानी नहीं पिला सकते जब तक ये चरवाहे अपने जानवर निकाल न ले जाएँ, और हमारे बाप बहुत ही बूढ़े हैं। तब उसने उन दोनों के लिए पानी पिला दिया। फिर छाया की ओर पलट गया और कहा, ऐ मेरे रब, जो भलाई भी तू मेरी ओर उतार दे, मैं उसका ज़रूरतमंद हूँ। (अल-कसस, 22-24)



इन दो स्त्रियों ने अपने पिता (ईश्वर के नबी) शूऐब को मूसा के बारे में बताया, तो शूऐब ने अपनी एक लड़की को मूसा के पास भेजा। फिर उन दोनों में से एक लजाती हुई उसके पास आई। उसने कहा, मेरे बाप आपको बुला रहे हैं, ताकि आपने हमारे लिए (जानवरों को) जो पानी पिलाया है, उसका बदला आपको दें। (अल-कसस, 25)

मूसा शूऐब के पास पहुँचे। फिर जब वह उसके पास पहुँचा और उसे अपने सारे हालात सुनाए तो उसने कहा, कुछ भय न करो। तुम ज़ालिम लोगों से छुटकारा पागए हो। (अल-कसस, 25)

जब शूऐब की लड़की ने मूसा की अमानतदारी देखी तो। उन दोनों स्त्रियों में से एक ने कहा, ऐ मेरे बाप। इसको मज़दूरी पर रख लीजिए। अच्छा व्यक्ति, जिसे आप मज़दूरी पर रखें, वही है जो बलवान, अमानतदार हो। (अल-कसस, 26)

शूऐब ने मूसा से यह कहा। उसने कहा, मैं चाहता हूँ कि अपनी इन दोनों बेटियों में से एक का विवाह तुम्हारे साथ इस शर्त पर करदूँ कि तुम आठ वर्ष तक मेरे यहाँ नौकरी करो। और यदि तुम दस वर्ष पूरे कर दो तो यह तुम्हारी ओर से होगा। मैं तुम्हें कठिनाई में डालना नहीं चाहता। यदि अल्लाह ने चाहा तो तुम मुझे नेक पाओगे। कहा, यह बात मेरे और आपके बीच तय हो चुकी है। इन दोनों अवधियों में से जो भी मैं पूरी करदूँ तो मुझ पर कोई ज़्यादती नहीं होगी। और जो कुछ हम कह रहे हैं उसके विषय में अल्लाह पर भरोसा काफ़ी है। (अल-कसस, 27-28)

जब मूसा ने आपसी संझौते के अनुसार अपनी नौकरी की अवधि (8

वर्ष) पूरी करली, तो अपनी पत्नी को लेकर यात्रा प्रारंभ की।

फिर जब मूसा ने अवधि पूरी कर दी और अपने घरवालों को लेकर चला तो तूर की ओर उसने एक आग-सी देखी। उसने अपने घरवालों से कहा, ठहरो, मुझे एक आग नज़र आई है। कदाचित मैं वहाँ से तुम्हारे पास कोई खबर ले आऊँ या उस आग से कोई अंगारा ही, ताकि, तुम ताप सको। (अल-कसस, 29)

इस समय मैं मूसा को ईश्वर की ओर से यह आदेश दिया गया। फिर जब वह वहाँ पहुँचा तो दाहिनी घाटी के किनारे से शुभ क्षेत्र में वृक्ष से आवाज़ आई, ऐ मूसा, मैं ही अल्लाह हूँ, सारे संसार का रब। और यह कि डाल दे अपनी लाठी। फिर जब उसने उसे देखा कि वह बलखा रही है, जैसे कोई साँप हो, तो वह पीट फेरकर भागा और पीछे मुड़कर भी न देखा। ऐ मूसा। आगे आ और भय न कर। निस्संदेह तेरे लिए कोई भय की बात नहीं। अपना हाथ अपने गिरेबान में डाल। बिना किसी खराबी के चमकता हुआ निकलेगा। और भय के समय अपनी भुजा को अपने से मिलाए रख। ये दो निशानियाँ हैं तेरे रब की ओर से फिरऔन और उसके दरबारियों के पास लेकर जाने के लिए। निश्चय ही वे बड़े अवज्ञाकारी लोग हैं। (अल-कसस, 30-32)

लेकिन मूसा ने कुछ समय पहले अपने दुश्मन की हत्या की थी, और उनकी जिट्ठा में दोश भी था, इन्हीं दो कारणों से मूसा को फिरऔन से डर होने लगा था। उसने कहा, ऐ मेरे रब। मुझसे उनके एक आदमी की जान गई है। इसलिए मैं डरता हूँ कि वे मुझे मार डालेंगे। मेरे भाई हारून की ज़बान मुझसे बढ़कर धारा प्रवाह है। अतः उसे मेरे साथ सहायक के रूप में भेज कि वह मेरी पुष्टि करे। मुझे भय है कि वे मुझे झुठलाएँगे। (अल-कसस, 33-34)

मूसा ने अपने भाई हारून को अपने लिए मददगार बनाने की ईश्वर से प्रार्थना की। और मेरे लिए मेरे अपने घरवालों में से एक सहायक नियुक्त कर दे, हारून को, जो मेरा भाई है। उसके द्वारा मेरी कब्र मज़बूत कर। और उसे मेरे काम में शरीक कर दे, कि हम अधिक से अधिक तेरी तसबीह करें, और तुझे खूब याद करें। निश्चय ही तू हमें खूब देख रहा है। कहा, दिया गया तुम्हें जो तुने माँगा, ऐ मूसा। (ता-हा, 29-36)

जब मूसा और उनके भाई फिरऔन के पास पहुँचे, तो अपने पास आया हुआ देवत्व संदेश को सामने रखते हुए एक ईश्वर की प्रार्थना करने की ओर उसको बुलाया, जिसका कोई साझी नहीं है। उसको अपने जुल्म, अन्याय से बनी इस्राईल के कैदियों को आज़ाद करने, उन्हें अपनी इच्छा के अनुसार अपने रब की प्रार्थना करने, उन्हें अपने ईश्वर के एकीकरण और उसकी विनती करने के लिए छोड़ दे। तो फिरऔन घमण्ड करने लगा, सरकशी पर उतर आया और मूसा की ओर अल्पीकरण और नीच निगाहों से देखते हुए यह कहा। (फिरऔन ने) कहा, क्या हमने तुझे, जब कि तू बच्चा था, अपने यहाँ पाला नहीं था ? और तू अपनी अवस्था के कई वर्षों तक हम में रहा, और तू ने अपना वह काम किया, जो किया। तू बड़ा ही कृतघ्न है। (अल-शुअरा, 18-19)

तो मूसा ने उन्हें यह जवाब दिया (मूसा ने) कहा, ऐसा तो मुझसे उस समय हुआ जब कि मैं चूक गया था। (अल-शुअरा, 20)

यानी देवत्व संदेश और धार्मिक नियम मेरे पास आने से पहले-पहले फिर जब मुझे तुम्हारा भय हुआ तो मैं तुम्हारे यहाँ से भाग गया। फिर मेरे रब ने मुझे निर्णय शक्ति प्रदान की और मुझे रसूलों में सम्मिलित किया। (अल-शुअरा, 21)

फिर मूसा ने पालन-पोषण के कारण फिरऔन के एहसान जताने पर यह उत्तर दिया यही वह उदार अनुग्रह है जिसका एहसान तू मुझपर जताता है कि तू ने इस्राईल की संतान को गुलाम बना रखा है। (अल-शुअरा, 22)

यानी यह अनुग्रह जिसके अनुसार तू मुझ पर एहसान जता रहा है, जब कि मैं भी बनी इस्राईल का एक सदस्य हूँ, यह अनुग्रह तू ने बनी इस्राईल को जो गुलाम बनाया है और अपनी सेवा, रक्षा के लिए उपयोग किया है, उसके बदले के समान है। फिर फिरऔन ने मूसा से उस ईश्वर के बारे में प्रश्न किया, जिसकी ओर वह निर्देश करते हैं। फिरऔन ने कहा, और यह सारे संसार का रब क्या होता है? (अल-शुअरा, 23)

तो फिरऔन को यह संदेह रहित उत्तर मिला। (मूसा ने) कहा, आकाशों और धरती का रब और जो कुछ इन दोनों के मध्य है उसका भी, यदि तुम्हें यकीन हो। (अल-शुअरा, 24)

फिरऔन मज़ाक उड़ाने लगा। उसने (फिरऔन ने) आस-पास वालों से कहा, क्या तुम सुनते नहीं हो ? (अल-शुअरा, 25)

मूसा किसी की परवाह किये बिना अपना संदेश देते रहे। (मूसा ने) कहा, तुम्हारा रब और तुम्हारे अगले बाप-दादा का रब। (अल-शुअरा, 26)

फिरऔन अपनी सरकशी में बड़ने लगा। (फिरऔन) बोला, निश्चय ही तुम्हारा यह रसूल, जो तुम्हारी ओर भेजा गया है, बिल्कुल ही पागल है। (अल-शुअरा, 27)

लेकिन ईश्वर के रसूल मूसा अपने मुद्दे से नहीं हटे। (मूसा ने) कहा, पूर्व और पश्चिम का रब और जो कुछ उनके बीच है उसका भी, यदि तुम कुछ बुद्धि रखते हो। (अल-शुअरा, 28)

बुद्धिमत्ता, सबूत और तर्क से खाली घमण्डी और तानाशाह फिरऔन ने धमकी देना प्रारंभ कर दिया। (फिरऔन) बोला, तुम ने यदि मेरे सिवा किसी और को हाकिम बनाया तो मैं तुम्हें बन्दी बना कर रहूँगा। (अल-शुअरा, 29)

जिस प्रकार से मूसा को मज़ाक और परिहास अपना संदेश पहुँचाने से रोक न सका, उसी प्रकार से धमकियाँ भी उन्हें रोक न सकी, परन्तु यह उत्तर दिया। (मूसा ने) कहा, क्या यदि मैं तेरे पास एक स्पष्ट चीज़ ले आऊँ तब भी ? (फिरऔन) बोला, अच्छा, वह ले आ, यदि तू सच्चा है। फिर उसने (मूसा ने) अपनी लाठी डाल दी, तो अचानक क्या देखते हैं कि वह एक प्रत्यक्ष अजगर है। और उसने (मूसा ने) अपना हाथ बाहर खींचा, तो फिर क्या देखते हैं कि वह देखनेवालों के सामने चमक रहा है। (अल-शुअरा, 30-33)



फिरऔन को यह भय होने लगा कि कहीं लोग मूसा पर विश्वास करने लगे। उसने (फिरऔन ने) अपने आस-पास के सरदारों से कहा, निश्चय ही यह एक बड़ा जादूगर है। चाहता है कि अपने जादु से तुम्हें तुम्हारी अपनी भूमि से निकाल बाहर करे, तो अब तुम क्या कहते हो ? उन्होंने कहा, इसे और इसके भाई को अभी टाले रखिए, और जमा करनेवालों को नगरों में भेज दीजिए कि वे हर एक माहिर जादूगर को आपके पास ले आएँ। (अल-शुअरा, 34-37)

फिर जब फिरऔन ने मूसा द्वारा सारे सबूत देख लिया, तो वह घमण्ड करते हुए इनको झुठलाया और इनका तिरस्कार किया। और हमने फिरऔन को अपनी सब निशानियाँ दिखाई, किन्तु उसने झुठलाया और इन्कार किया। उसने कहा, ऐ मूसा। क्या तू हमारे पास इसलिए आया है कि अपने जादु से हमको हमारे अपने भू-भाग से निकाल दे? अच्छा, हम भी तेरे पास ऐसा ही जादू लाते हैं। अब हमारे और अपने बीच एक निश्चित स्थान ठहराले, कोई बीच की जगह, न हम इसके विरुद्ध जाएँ और न तू। कहा, उत्सव का दिन तुम्हारे वादे का है, और यह कि लोग दिन चढ़े इकट्ठे हो जाएँ। तब फिरऔन ने पलटकर अपने सारे हथकण्डे जुटाए। और (मुकाबले में) आ गया। (ता-हा, 56-60)

मूसा को अपनी कौम पर दण्ड का भय हुआ। मूसा ने उन लोगों से कहा, तबाही है तुम्हारी, झूठ गढ़कर अल्लाह पर नथोपो कि वह तुम्हें एक यातना से विनष्ट कर दे, और झूठ जिस किसी ने भी गढ़कर थोपा वह असफल रहा। (ता-हा, 61)

यह लोग आपस में अंतर करने लगे, और इनमें से एक ने यह कहा, यह किसी जादूगर की वाणी नहीं है। इसपर अपने मामले में उन्होंने परस्पर विचार विनिमय किया और चुपके-चुपके कानाफूसी की। (ता-हा, 62)

लेकिन वह लोग पुनरावृत्ति करने लगे, और उन्हें से अधिक लोग यह कहने लगे

कहने लगे, ये दोनों जादूगर हैं, चाहते हैं कि अपने जादु से तुम्हें तुम्हारे भू-भाग से निकाल बाहर करें, और तुम्हारी उत्तम और उच्च प्रणाली को तहस-नहस करके रख दें। अतः तुम सब मिलकर अपना उपाय जुटा लो, फिर पंक्तिबद्ध होकर आओ। आज जो प्रभावी रहा, वही सफल है। वे बोले, ऐ मूसा। या तो तुम फेंको या फिर हम पहले फेंकते हैं। कहा, नहीं, बल्कि तुम्ही फेंको। फिर अचानक क्या देखते हैं कि उनकी रस्सियाँ और उनकी लाठियाँ उनके जादु से उसके ख्याल में दौड़ती

हुई प्रतीत हुई। (ता-हा, 63-66)

मूसा को यह भय हुआ कि कहीं जादूगर लोगों को धोखे में न डाल दें। और मूसा अपने जी में डरा। (ता-हा, 67)

और ईश्वर की ओर से मूसा के पास यह संदेश आया। हमने कहा, मत डर। निस्संदेह तू ही प्रभावी रहेगा। और डाल दे जो तेरे दाहिने हाथ में है। जो कुछ उन्होंने रचा है वह उसे निगल जाएगा। जो कुछ उन्होंने रचा है, वह तो बस जादूगर का स्वांग है और जादूगर सफल नहीं होता, चाहे वह जैसे भी आए। (ता-हा, 68-69) हमने मूसा की ओर प्रकाश ना की कि अपनी लाठी डाल दे। फिर क्या देखते हैं कि वह उनके रचे हुए स्वांग को निगलती जा रही है। इस प्रकार सत्य प्रकट हो गया और जो कुछ वे कर रहे थे, मिथ्या होकर रहा। (अल-आराफ, 117-118)

और आश्चर्यक परिणाम यह रहा। अतः वे हार गए और अपमानित होकर रहे। और जादूगर सहसा सजदे में गिर पड़े। बोले, हम सारे संसार के रब पर ईमान ले आए, मूसा और हारून के रब पर। (अल-आराफ, 119-122) अन्ततः जादूगर सजदे में गिर पड़े। बोले, हम हारून और मूसा के रब पर ईमान ले आए। (ताहा, 70)

तो फिरऔन का उत्तर मुखता पर आधारित था। उसने कहा, तुमने मान लिया उसको, इससे पहले कि मैं तुम्हें इसकी अवज्ञा देता ? निश्चय ही यह तुम सबका प्रमुख है जिसने तुम्हें जादू सिखाया है। अच्छा, अब मैं तुम्हारे हाथ और

पाँव विपरीत दिशाओं से कटवाँगा और खजूर के तनों पर तुम्हें सूली देदूँगा । (ताहा, 71)

जादुगरों का जवाब फिरऔन के लिए आश्चर्य था, जो इस बात का वर्णन कर रहा था कि ईमान अपने भक्तों पर कैसे प्रभावित होता है? उन्होंने कहा, कुछ हरज नही, हम तो अपने रब ही की ओर पलटकर जानेवाले हैं। हमें तो इसी की लालसा है कि हमारा रब हमारी खताओं को क्षमा कर दे, क्योंकि हम सबसे पहले ईमान लाए। (अल-शुअरा, 50-51)

फिरऔन ईमान वालों को सदा तकलीफ देता रहा, तो ईश्वर ने उसको और उसके साथियों को दण्ड दिया और हमने फिरऔनियों को कई वर्ष तक अकाल और पैदावर की कमी में ग्रस्त रखा कि वे चेतें । फिर जब उन्हें अच्छी हालत पेश आती है तो कहते हैं, यह तो है ही हमारे लिए। और जब उन्हें कोई बुरी हालत पेश आए तो वे उसे मूसा और उसके साथियों की नहूसत (अपशकुन) ठहराएँ। सुन लो, उनकी नहूसत तो अल्लाह ही के पास है, परन्तु उनमें से अधिकतर लोग जानते नहीं। (अल-आराफ़, 130-131)

लेकिन वे न ईमान लाए और न तौबा की वे बोले, तू हम पर जादू करने के लिए चाहे कोई भी निशानी हमारे पास ले आए, हम तुझपर ईमान लानेवाले नहीं। अन्ततः हमने उनपर तूफ़ान और टिड्डियाँ और छोटे कीड़े मेंढक और रक्त कितनी ही निशानियाँ अलग-अलग भेजी, किन्तु वे घमण्ड ही करते रहे। वे थे ही अपराधी लोग। (अल-आराफ़, 132-133)

जब वे हिम्मत हार गए जब कभी उनपर यातना आ पड़ती, कहते, ऐ मूसा हमारे लिए अपने रब से प्रार्थना करो, उस प्रतिज्ञा के आधार पर जो उसने तुमसे कर रखी है। तुमने यदि हम पर से यह यातना हटा दी तो हम अवश्य ही तुमपर ईमान ले आएँगे और इस्राईल की संतान को तुम्हारे साथ जाने देंगे। किन्तु जब हम उनपर से यातना को एक नियत समय के लिए, जिस तक वे पहुँचनेवाले ही थे, हटा लेते तो क्या देखते कि वे वचन भंग करने लग गए। (अल-आराफ़, 134-135)

जब वे अपने वचन को पूरा नहीं किया बल्कि उसको भंग कर दिया । फिर हमने उनसे बदला लिया और उन्हें गहरे पानी में डुबो दिया, क्योंकि उन्होंने हमारी निशानियाँ

को ग़लत समझा और उनसे ग़ाफिल हो गए। (अल-आराफ़, 136)

जब ईजिप्ट के वासी अपने राजा फिरऔन के पालन में अपनी ज़िद हठधर्मी में और अल्लाह के नबी मूसा इब्ने इम्रान के विरोध में हद से ज्यादा आगे बढ़ गये। जब कि ईश्वर ने इनके सामने महत्वपूर्ण सबूत रख दिये, बुद्धि को आश्चर्य करने और निगाहों को चौंका देनेवाले चमत्कार भी दिखलाये, फिर भी वे न पुनरावृत्ति करें और न सुधरे। फिरऔन की कौम में से बहुत कम लोग ईमान लाये। सारे जादूगर और बनी इस्राईल के सारे लोग फिरऔन के जुल्म और उसके दण्ड के भय से अपने ईमान को गुप्त रखा करते थे । ईश्वर ने मूसा और उनके भाई हारून को यह आदेश दिया कि वे अपने भक्तों के लिये फिरऔनियों के घरों से हटकर अलग घरों का चयन करें ताकि जब भी उन्हें आदेश मिले तो वे प्रस्थान करने के लिए तैयार रहें, आपस में एक दूसरे को पहचान सकें और इन घरों में ईश्वर की प्रार्थना करें। हमने मूसा और उसके भाई की ओर प्रकाशना की कि, तुम दोनों अपने लोगों के लिए मिस्त्र में कुछ घर निश्चित कर लो और अपने घरों को क़िबला बना लो। और नमाज़ कायम करो और ईमानवालों को शुभ-सूचना दे दो। (यूनुस, 87)

फिर ईश्वर ने अपने बन्दे मूसा को यह आदेश दिया । हमने मूसा की ओर प्रकाशना की, मेरे बन्दों को लेकर रातों-रात निकल जा। निश्चय ही तुम्हारा पीछा किया जाएगा (अल-शुअरा, 52)

तो फिरऔन का उत्तर यह रहा । इस पर फिरऔन ने जमा करनेवालों को नगरों में भेजा कि यह गिरे-पड़े लोगों का एक गिरोह है, और ये हमें कुदध कर रहे हैं। और हम चौकन्ना रहनेवाले लोग हैं। (अल-शुअरा, 53-56)

ईश्वर की इच्छा यह थी। इस प्रकार हम उन्हें बागों और स्त्रोतो और खज़ानों और अच्छे स्थान से निकाल लाए। ऐसा ही हम करते हैं, और इनका वारिस हमने इस्राईल की संतान को बना दिया। (अल-शुअरा, 57-59)

वे बनी इस्राईल से जा मिले। सुबह-तड़के उन्होंने उनका पीछा किया। (अल-शुअरा, 60)

जब वे बनी इस्राईल तक पहुँच गये। फिर जब दोनों गिरोहों ने एक-दूसरे को देख लिया तो मूसा के साथियों ने कहा, हम तो पकड़े गए। (अल-शुअरा, 61)

लेकिन ईश्वर ने रसूल मूसा का जवाब अपने ईश्वर पर भरोसा और यकीन से भरा था। उसने कहा, कदापि नहीं, मेरे साथ मेरा रब है। वह अवश्य मेरा मार्गदर्शन करेगा। (अल-शुअरा, 62)

तो ईश्वर की कृपा और मार्गदर्शन इस रूप में आ गयी। तब हमने मूसा की ओर प्रकाशना की, अपनी लाठी सागर पर मार। तो वह फट गया और (उसका) प्रत्येक टुकड़ा एक बड़े पहाड़ की भाँति हो गया। और हम दूसरों को भी निकट ले आए। हमने मूसा को और उन सब को जो उसके साथ थे, बचा लिया। और दूसरों को डुबो दिया। निस्संदेह इस में एक बड़ी निशानी है। इस पर भी उनमें से अधिकतर माननेवाले नहीं। और निश्चय ही तुम्हारा रब ही है जो बड़ा प्रभुत्वशाली, अत्यन्त दयावान है। (अल-शुअरा, 63-68)

इस गंभीर घड़ी में और हमने इस्राईलियों को सागर से पार करा दिया। फिर फिरऔन और उसकी सेनाओं ने सरकशी और ज्यादाती के साथ उनका पीछा किया। (यूनस, 90)

इस समय फिरऔन को अपनी मृत्यु और डूबने का पूरा विश्वास हो गया। यहाँ तक कि जब वह डूबने लगा तो पुकार उठा, मैं ईमान ले आया कि उसके सिवा कोई पूज्य-प्रभु नहीं जिसपर इस्राईल की संतान ईमान लाई। अब मैं आज्ञाकारी हूँ। (यूनस, 90)

लेकिन उससे देर हो चुकी थी, परन्तु मौत ने उसको आ पकड़ा (अल्लाह ने कहा) क्या अब ? हालाँकि इससे पहले तू ने अवज्ञा की और बिगाड़ पैदा करनेवालों में से था। (यूनस, 91)

ईश्वर ने इस्राईलों के दुश्मन को डुबाते हुए उन पर अपनी अनुग्रह पूरी कर दी। परन्तु जब वे समुद्र पार किये। और इस्राईल की संतान को हमने सागर से पार करा दिया, फिर वे ऐसे लोगों के पास पहुँचे जो अपनी कुछ मूर्तियों से लगे बैठे थे। कहने लगे, ऐ मूसा। हमारे लिए भी कोई ऐसा उपास्य ठहरा दे, जैसे इनके उपास्य हैं। (अल-आराफ़, 138)

यानी फिरऔन और उसकी सेना से ईश्वर द्वारा मुक्ति की अनुग्रह के बाद इस्राईलों ने मूर्खता पर आधारित विनती की। उसने कहा, निश्चय ही तुम बड़े ही अज्ञानी लोग हो। निश्चय ही वह सब कुछ जिस में ये लोग लगे हुए हैं, बरबाद होकर रहेगा और जो कुछ ये कर रहे हैं सर्वथा व्यर्थ है। (अल-आराफ़, 138-139)

फिर मूसा अपने ईश्वर की ओर से रखी हुई अवधि पूरा करने चले गये। हमने मूसा से तीस रातों का वादा ठहराया, फिर हमने दस और बढ़ाकर उसे पूरा किया। इस प्रकार उसके रब की ठहराई हुई अवधि चालीस रातों में पूरी हुई और मूसा ने अपने भाई हारून से कहा, मेरे पीछे तुम मेरी क्रौम में मेरा प्रतिनिधित्व करना और सुधारना-संवारना और बिगाड़ पैदा करने वालों के मार्ग पर न चलना। (अल-आराफ़, 142)

ईश्वर ने मूसा को अपने संदेश और वाणी से नवाज़ा (उपकृत किया)। उसने कहा, ऐ मूसा। मैंने दूसरे लोगों के मुकाबले में तुझे चुनकर अपने संदेशों और अपनी वाणी से तुझे नवाज़ा (उपकृत किया) अतः जो कुछ मैं तुझे दूँ उसे ले और कृतज्ञता दिखा। (अल-आराफ़, 144)

ईश्वर ने मूसा को उपदेश और देवत्व आदेश से भरी हुई पुस्तक तौरात के द्वारा अनुग्रह किया। और हमने उसके लिए तख्तियों पर उपदेश के रूप में हर चीज़ और हर चीज़ का विस्तृत वर्णन लिख दिया। अतः उनको मज़बूती से पकड़ा उनमें उत्तम बातें हैं। अपने कौम के लोगों को हुक्म दे कि वे उनको अपनाएँ। मैं शीघ्र ही तुम्हें अवज्ञाकारियों का घर दिखाऊँगा। (अल-आराफ़, 145)

जब मूसा ने अपनी अवधि पूरी कर ली और ईश्वर ने उन्हें तौरात से नवाज़ा (उपकृत किया) तो मूसा अपनी कौम के पास लौटे और यह देखा। और मूसा के पीछे उसकी कौम ने अपने ज़ेवरों से अपने लिए एक बछड़ा बना लिया जिस में से बैल की-सी आवाज़ निकलती थी। क्या उन्होंने देखा नहीं कि वह न तो उनसे बातें करता है और न उन्हें कोई राह दिखाता है। उन्होंने उसे अपना उपास्य बना लिया और वे बड़े अत्याचारी थे। और जब (चेतावनी से) उन्हें पश्चात्ताप हुआ और उन्होंने देख लिया कि वास्तव में वे भटक गए हैं तो कहने लगे, यदि हमारे रब ने हमपर दया न की और उसने हमें क्षमा न किया तो हम घाटे में पड़ जाएँगे। (अल-आराफ़, 148-149)

इस घटना का असर मूसा पर बहुत बुरा हुआ। और जब मूसा क्रोध और दुख से भरा हुआ अपनी कौम की ओर लौटा तो उसने कहा, तुम लोगों ने मेरे पीछे मेरी जगह बुरा किया। क्या तुम अपने रब के हुक्म से पहले ही जल्दी कर बैठे? फिर उसने तख्तियाँ डाल दीं और अपने भाई का सिर पकड़कर उसे अपनी ओर खींचने लगा। वह बोला, ऐ मेरी माँ के बेटे। लोगों ने मुझे कमज़ोर समझ लिया और निकट था कि मुझे मार डालते। अतः शत्रुओं को मुझपर हँसने का अवसर न दे और अत्याचारी लोगों में मुझे सम्मिलित न कर। (अल-आराफ़, 150-151)

फिर मूसा ने बछड़ा बनाने वाले सामरी से यह कहा। ऐ सामरी। तेरा क्या मामला है? (ता-हा, 95)

तो सामरी ने यह जवाब दिया उसने कहा, मुझे उसकी सूझ प्राप्त हुई जिसकी सूझ उन्हें प्राप्त न हुई। फिर मैंने रसूल के पद-चिह्न से एक मुट्ठी (मिट्टी) उठा ली। फिर उसे डाल दिया और मेरे जी ने मुझे कुछ ऐसा ही सुझाया। (ता-हा, 96)

तो मूसा का जवाब निर्णायक और ईश्वर का साड़ी ठहराने के सिद्धांत को गलत बताने वाला था। कहा, अच्छा, तो जा। अब इस जीवन में तेरे लिए यही है कि कहता रहे, कोई छुए नहीं। और निश्चय ही तेरे लिए एक निश्चित वादा है जो तुझ पर से कदापि न टलेगा। और देख अपने इष्ट-पूज्य को जिस पर तू रीझा-जमा बैठा था। हम उसे जला डालेंगे, फिर उसे चूर्ण-विचूर्ण करके दरिया में बिखेर देंगे। तुम्हारा पूज्य-प्रभु तो बस वही अल्लाह है जिसके अतिरिक्त कोई पूज्य-प्रभु नहीं। वह अपने ज्ञान से हर चीज़ पर हावी है। (ता-हा, 97, 98)

तख्तियाँ लेने के बाद फिर मूसा अपनी कौम को लेकर पवित्र धरती की ओर निकल पड़े। और जब मूसा का क्रोध शान्त हुआ तो उसने तख्तियों को उठा लिया। उनके लेख में उन लोगों के लिए मार्गदर्शन और दयालुता थी जो अपने

रब से डरते हैं। (अल-आराफ़, 154)

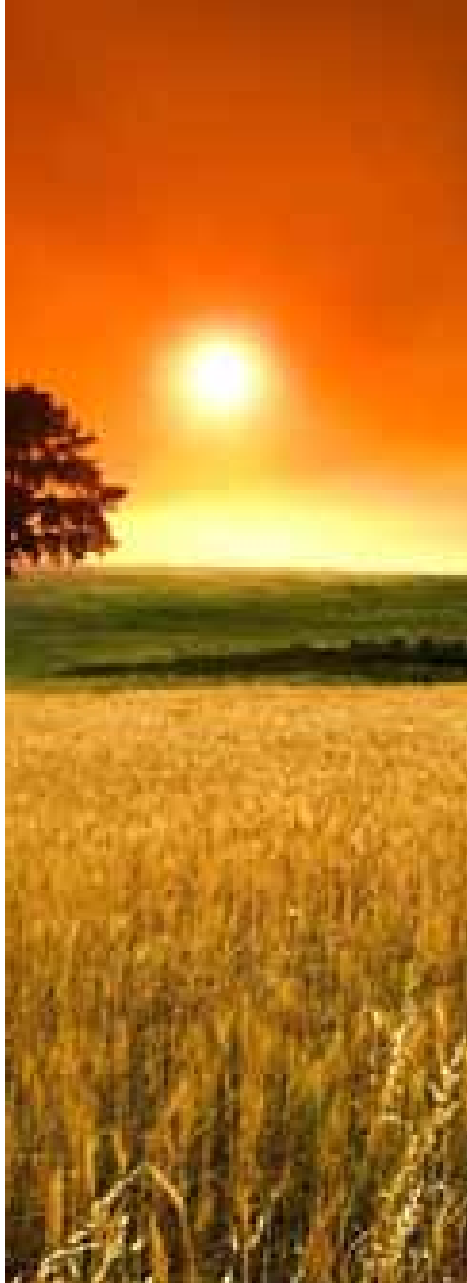
कुछ इस्राईली तौरात के आदेशों को स्वीकार करना नहीं चाहते थे, तो ईश्वर ने उनके सरो पर पर्वत को उठा दिया। और याद करो जब हमने पर्वत को हिलाया जो उनके ऊपर था। मानों वह कोई छत्र हो और वे समझे कि बस वह उनपर गिरा ही चाहता है, थामों मज़बूती से जो कुछ हमने तुम्हें दिया है और जो कुछ उसमें है उसे याद रखो, ताकि तुम बच सको। (अल-आराफ़, 171)

हालाँकि तौरात उनके लिए मार्गदर्शन और दया का कारण था, फिर भी इन लोगों ने केवल पर्वत उन पर गिरने के भय से इसको स्वीकार कर लिया। इसी प्रकार से ईश्वर के नबी मूसा के साथ इस्राईलियों कि कट्टरपंथी चलती रही, परन्तु वे एक समय किसी व्यक्ति की हत्या कर दिये। इस्राईलियों का एक धनी व्यक्ति था, तो एक रात उसका भतीजा उसके पास आया और उसकी हत्या कर दी, लोग आपस में झगड़ने लगे, एक दूसरे पर आरोप लगाने लगे और हर एक अपने आपसे इस आरोप का इन्कार करने लगे। वे इस समस्या को लेकर ईश्वर के रसूल मूसा के पास पहुँचे, कट्टरपंथी और दुर्व्यवहार में यह कहने लगे ऐ मूसा अगर तुम ईश्वर के नबी हो, तो अपने ईश्वर से पूछ लो तो ईश्वर ने मूसा को यह आदेश दिया ऐ मूसा इस्राईलों को आदेश दो कि वे एक गाय लेकर ज़िबाह करें, फिर इस गाय का एक टुकड़ा मृत शव पर मारें, तो मैं अपनी इच्छा से उसको जीवित करदूँगा, और वह स्वयं अपनी ज़बान से अपने हत्यारे के बारे में बतलायेगा। ईश्वर ने कहा और याद करो जब तुमने एक व्यक्ति की हत्या कर दी, फिर उस सिल-सिले में तुमने टाल-मटोल से काम लिया - जब कि जिसको तुम छिपा रहे थे, अल्लाह उसे खोल देनेवाला था। तो हम ने कहा, उसे उसके एक हिस्से से मारो। इस प्रकार अल्लाह मुर्दों को जीवित करता है और तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखाता है, ताकि तुम समझो। (अल-बकरा, 72-73)

मूसा ने उनसे कहा कि गाय को ज़िबा करो। अगर यह लोग किसी भी गाय को लेकर ज़िबा कर देते यह उनके लिए काफी हो जाता, लेकिन इन लोगों ने कट्टरपंथी की। ईश्वर ने अपने नबी मूसा की ज़बानी यह कहा। निश्चय ही अल्लाह तुम्हें आदेश देता है कि एक गाय ज़िबाह करो। कहने लगे, क्या तुम हमसे परिहास करते हो? उसने कहा, मैं इससे अल्लाह की पनाह माँगता हूँ कि जाहिल बन्नू। (अल-बकरा, 67)

तो कौम ने यह कहा। बोले, हमारे लिए अपने रब से निवेदन करो कि वह हम पर स्पष्ट करदे कि वह (गाय) कैसी हो? (अल-बकरा, 68)

वे अपने आप पर सख्ती करने लगे तो ईश्वर ने भी उनके साथ सख्ती का मामला किया। उसने कहा, वह कहता है कि वह ऐसी गाय हो जो न बूढ़ी हो, न बछिया (अल-बकरा, 68)



यानी बड़ी उम्र वाली भी न हो और न बहुत ही छोटी हो इनके बीच की रास हो तो, जो तुम्हें हुक्म दिया जा रहा है, करो ।

(अल-बकरा, 68)

इन लोगों ने अपने आप पर परिधि सीमित कर ली। कहने लगे, हमारे लिए अपने रब से निवेदन करो कि वह हमें बता दे कि उसका रंग कैसा हो?

(अल-बकरा, 69)

जब कि ईश्वर ने उनसे किसी रंग की (गाय का) प्रश्न नहीं किया और न ही किसी विशेष रंग की शर्त लगायी । कहा, वह कहता है कि वह गाय सुनहरी हो, गहरे चटकीले रंग की कि देखनेवालों को प्रसन्न करदेती हो। (अल-बकरा, 69)

बंद कमरे में बोर्ड के सदस्यों के साथ बैठक किये, फिर मूसा के पास आये। बोले, हमारे लिए अपने रब से निवेदन करो कि वह हमें बता दे कि वह कैसी हो, गायों का निर्धारण हमारे लिए संदिग्ध हो रहा है। यदि अल्लाह ने चाहा तो हम अवश्य पता लगा लेंगे।

(अल-बकरा, 70)

तो मूसा ने उन्हें यह जवाब दिया । उसने कहा, वह कहता है कि वह ऐसी गाय है जो सधाई हुई नहीं है कि भूमि जोतती हो और न वह खेत को पानी देती है, ठीक-ठाक है, उसमें किसी दूसरे रंग की मिलावट नहीं है। बोले, अब तुमने ठीक बात बताई है। फिर उन्होंने उसे ज़िबह किया, जबकि वे करना नहीं चाहते थे। (अल-बकरा, 71)

बछड़े को बनाने वाला सामिररी

ये संभव नहीं है के अल्लाह के नबी हारुण बछड़े को बनाने वाले और शिर्क की ओर बुलाने वाले हो। क्यों कि अल्लाह के सारे रसूल और नबी एकीकरण का संदेश देते हैं। जो भी इसके अलावा जो अलग बात कहता है। वो अवश्य रूप से विरुपण करने वाला है। इस प्रकार की बातों में से एक बात नकल की गई है, हारुण ने उनसे कहा अपनी औरतों लडकों और अपनी लडकियों के कानों की बालियाँ निकालो और मेरे पास ले आओ। तो सारे लोग अपने बच्चों की बालियाँ निकाल कर हारुण के पास ले आये। हारुण ने उनसे ये ले लिया और इस सोने से औज़ार का उपयोग करके एक बछड़ा बना दिया। और कहा ए इश्राईल ये तुम्हारा भगवान है जो मिश्र के सर जमीन से तुम्हारे पास आया। (खुर्रुज 32/2-4)

वे इस्राईलियों के शहर-शहर, गाँव-गाँव घूमे, फिर बड़े कष्ट और उच्च लागत (कीमत) से यह गाय प्राप्त किये। उसको ज़िबह किया और ज़िबह करना नहीं चाहते थे। वे गाय का एक टुकड़ा लेकर उस मृत शव पर मारा जिसके हत्यारे के बारे में वे झगड़ रहे थे, तो वह मृत शव ईश्वर के आदेश से अपनी समाधि से ज़िंदा खड़ा हो गया, तो मूसा ने उससे प्रश्न किया तुम्हारी

हत्या किसने की ? तो वह बोला इसने। उसे उसके एक हिस्से से मारो। इस प्रकार अल्लाह मुर्दों को जीवित करता है और तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखाता है, ताकि तुम समझो। (अल-बकरा, 73)

जब वे पवित्र धरती कि ओर पहुँचे, तो देखा कि इसके वासी बड़े शक्तिशाली लोग हैं और याद करो जब मूसा ने अपनी क़ौम के लोगों से कहा था, ऐ मेरे लोगों । अल्लाह की उस नेमत को याद करो जो उसने तुम्हें प्रदान की है। उसने तुम में नबी पैदा किए और तुम्हें शासक बनाया और तुमको वह कुछ दिया जो संसार में किसी को नहीं दिया था। ऐ मेरे लोगों । इस पवित्र भूमि में प्रवेश करो जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए लिख दी है और पीछे न हटो, अन्यथा घाटे में पड़ जाओगे। उन्होंने कहा, ऐ मूसा। उसमें तो बड़े शक्तिशाली लोग रहते हैं। हम तो वहाँ कदापि नहीं जा सकते, जब तक कि वे वहाँ से निकल नहीं जाते। हाँ, यदि वे वहाँ से निकल जाएँ तो हम अवश्य प्रविष्ट हो जाएँगे। उन डरनेवालों में से ही



दो व्यक्ति ऐसे भी थे जिनपर अल्लाह का अनुग्रह था। उन्होंने कहा, उन लोगों के मुकाबले में दरवाज़े से प्रविष्ट हो जाओ। जब तुम उसमें प्रविष्ट हो जाओगे तो तुम ही प्रभावी होंगे। अल्लाह पर भरोसा रखो, यदि तुम ईमानवाले हो। उन्होंने कहा, ऐ मूसा! जब तक वे लोग वहाँ हैं, हम तो कदापि वहाँ नहीं जाएँगे। ऐसा ही है तो जाओ तुम और तुम्हारा रब, और दोनों लड़ो। हम तो यहीं बैठे रहेंगे। (अल-माइदा, 20-24)

आदेश के पालन करने में, अड़चने पैदा करने के कारण ईश्वर ने उन्हें दोषी ठहराया। सोंच-विचार से काम न लेने और ईश्वर के रसूल की अवज्ञा करने के कारण रास्ता भटकने का दण्ड दिया। उसने कहा, मेरे रब! मेरा अपने और अपने भाई के अतिरिक्त किसी पर अधिकार नहीं है। अतः तू हमारे और इन अवज्ञाकारी लोगों के बीच अलगाव पैदा कर दे। (अल-माइदा, 25)

ईश्वर ने उनकी प्रार्थना स्वीकार कर लिया।

कहा, अच्छा तो अब यह भूमि चालीस वर्ष तक इनके लिए वर्जित है। ये धरती में मारे-मारे फिरेंगे, तो तुम इन अवज्ञाकारी लोगों के प्रति दुखी न हो। (अल-माइदा, 26)

वे सुबह-शाम, रात-दिन बिना किसी लक्ष्य के ज़मीन में घूमते रहे।



4. ईसा इबने मरियम (अलैहिसलाम)

निश्चय मरियम के पिता बनी इस्राईल के एक नेक आदमी थे। जो अल्लाह के नबी दाऊद की नस्ल के पवित्र इमान घराने से थे। मरियम की माँ को गर्भ नहीं ठहरता था, उन्हें बच्चों की इच्छा थी, तो वह यह व्रत रखी कि अगर वह गर्भवती बने तो उनका बच्चा ईश्वर के लिये कुर्बान है, यानी ईश्वर के घर की सेवा के लिए भेंट कर दिया। याद करो जब इमरान की स्त्री ने कहा, मेरे रब! जो बच्चा मेरे पेट में है उसे मैंने हर चीज़ से छुड़ाकर भेंट स्वरूप तुझे अर्पित किया। अतः तू उसे मेरी ओर से स्वीकार कर। निस्संदेह तू सब कुछ सुनता, जानता है। फिर जब उसके यहाँ बच्ची पैदा हुई तो उसने कहा, मेरे रब! मेरे यहाँ तो लड़की पैदा हुई है अल्लाह तो जानता ही था जो कुछ उसके यहाँ पैदा हुआ था। और लड़का उस लड़की की तरह नहीं हो सकता- और मैंने उसका नाम मरयम रखा है। और मैं उसे और उसकी संतान को तिरस्कृत शैतान (के उपद्रव) से सुरक्षित रखने के लिए तेरी शरण में देती हूँ। (अले-इमरान, 35-36)

ईश्वर ने मरयम के माँ की भेंट को स्वीकार कर लिया। अतः उसके रब ने उसका अच्छी स्वीकृति के साथ स्वागत किया और उत्तम रूप में उसे परवान चढ़ाया। (आले-इमरान, 37)

यानी अच्छा रूप, खूबसूरती और नेक लोगों के मार्ग पर उन्हें चलाया, इसी कारण ईश्वर ने यह कहा। और ज़करिय्या को उसका संरक्षक बनाया। (आले-इमरान, 37)

परन्तु ईश्वर ने मरियम पर यह कृपा कि, उनका संरक्षक भी नबी था। कुछ लोगों का ख्याल है कि वह मरियम की मौसी या उनकी बहन के पति थे। जब कभी ज़करिय्या उसके पास मेहराब (इबादतगाह) में जाता तो उसके पास कुछ रोज़ी पाता। उसने कहा, ऐ मरियम! ये चीज़ें तुझे कहाँ से मिलती हैं? उसने कहा, यह अल्लाह के पास से है। निस्संदेह अल्लाह जिसे चाहता है, बे-हिसाब रोज़ी देता है। (आले-इमरान, 37)

यह ईश्वर की ओर से मरयम के लिए सम्मान था। ईश्वर ने मरयम को सम्मान, पवित्रता प्रदान की और उन्हें ईश्वर की प्रार्थना करने का आदेश दिया। और जब फ़रिश्तों ने कहा, ऐ मरयम! अल्लाह ने तुझे चुन लिया और तुझे पवित्रता प्रदान की और तुझे संसार की स्त्रियों के मुकाबले में चुन लिया। ऐ मरयम! पूरी निष्ठा के साथ अपने रब की आज्ञा का पालन करती रह, और सजदा कर और झुकनेवालों के साथ तू भी झुकती रह। (आले-इमरान, 42,43)

फिर जब ईश्वर ईसा को पैदा करना चाहा, तो मरयम अपने परिवार से अलग हो गई। और इस किताब में मरयम की चर्चा करो, जब कि वह अपने घरवालों से अलग होकर एक पूर्वी स्थान पर चली गई। फिर उसने उनसे (लोगों से) परदा कर लिया। तब हमने उसके पास अपनी रूह (फ़रिश्ते) को भेजा और वह उसके सामने एक पूर्ण मनुष्य के रूप में प्रकट हुआ। (मरयम, 16-17)

मरयम डर गयी और यह अनुमान लगाया कि वह उनके साथ कुछ ग़लत करने की इच्छा रखता है। वह बोल उठी, मैं तुझसे बचने के लिए रहमान (करुणामय प्रभु) की पनाह माँगती हूँ, यदी तू (अल्लाह का) डर रखनेवाला है (तो यहाँ से हट जाएगा)। उसने कहा, मैं तो केवल तेरे रब का भेजा हुआ हूँ ताकि तुझे नेकी और भलाई में बढ़ा हुआ लड़का दूँ। (मरयम, 18-19)

कुआरी मरयम बड़ी आश्चर्य हुई। वह बोली, मेरे कहाँ से लड़का होगा जब कि मुझे किसी आदमी ने छुआ तक नहीं और न मैं कोई बदचलन हूँ? (मरयम, 20)

उसने कहा ईश्वर का यही निर्णय है वह लड़के को अपनी निशानी बनाना चाहता है। यह काम ईश्वर के लिए बहुत आसान है। उसने कहा, ऐसा ही होगा। तेरे रब ने कहा है कि यह मेरे लिए आसान है। और इसलिए देगा। (ताकि हम तुझे) और ताकि हम उसे लोगों के लिए एक निशानी बनाएँ और अपनी ओर से एक दयालुता। यह तो एक ऐसी बात है जिसका निर्णय हो चुका है। (मरयम, 21)

ईसा को उस पवित्र माँ से पैदा करना, जो बदचलन नहीं थी, और बिना बाप के पैदा करना, यह ईश्वर की ओर से एक दया और अपने निर्णय को लागू करना है। ईसा की पैदाइश एक चमत्कार और निशानी है। ईसा की मिसाल बिना बाप

मानवता के सब से अच्छे लोग अल्लाह के नबी है

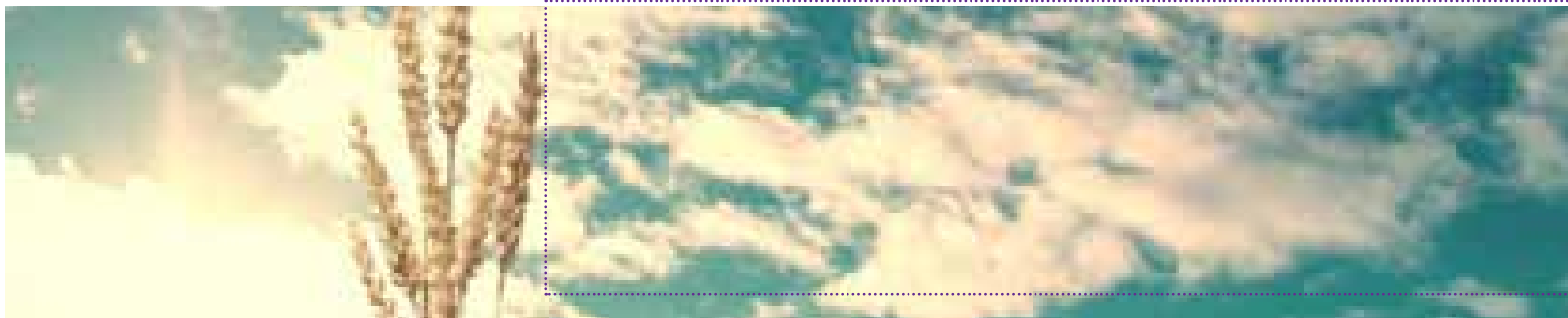
अल्लाह के नबी और उसके रसूल के विरुद्ध में कुछ ग़लत बातें कही गयी हैं, जिनमें यह है कि वह लोग शराब पिया करते थे, या उन लोगों से बलात्कार हुआ था या वह लोग लोगों की हत्या करने का आदेश देते थे.... यह सब बातें आदर्शवाणी मानव के बिल्कुल मुनासिब नहीं है, और नबी तो लोगों में सब से ज्यादा अच्छे चरित्र वाले होते हैं... वह सब अल्लाह के नबी हैं। इसी बारे में तैरात में नबी दाऊद के बारे में (समवयल (2) 11/2-26). नबी यशबिन नून के बारे में (यश 6/24). नबी मूसा के बारे में (अदद 31/14-18) और उसके अलावा बहुत सी बातें कही गयी हैं जो अल्लाह के रसूलों के स्थान को शोभा नहीं देता।

के आदम की सृष्टि जैसी है। निस्संदेह अल्लाह की दृष्टि में ईसा की मिसाल आदम जैसी है कि उसे मिट्टी से बनाया, फिर उससे कहा, होजा, तो वह हो जाता है। यह हक़ तुम्हारे रब की ओर से है, तो तुम संदेह में न पड़ना। अब इसके पश्चात कि तुम्हारे पास ज्ञान आ चुका है। (आले-इमरान, 59-60)

जब मरयम गर्भवती बन गई, तो वह अपने क्रौम से दूर हो गई। फिर उसे (मरयम को) उस (बच्चे) का गर्भ रह गया और वह उसे लिए हुए एक दूर के स्थान पर अलग चली गई। (मरयम, 22)

मरयम को प्रसव पीड़ा का समय आ गया। अन्ततः प्रसव-पीड़ा उसे एक खजूर के तने के पास ले आई। वह कहने लगी, क्या ही अच्छा होता कि मैं इससे पहले ही मर जाती और भूली-बिसरी हो गई होती। (मरयम, 23)

इस समय अल्लाह के नबी ईसा के लिए एक दूसरा चमत्कार प्रकट हुआ। उस समय उसे उस (वृक्ष) के नीचे से (फ़रिश्ते ने) पुकारा, ग़म न कर। तेरे रब ने तेरे नीचे एक स्त्रोत प्रवाहित कर रखा है। तू खजूर के उस पेड़ के तने को पकड़कर अपनी ओर हिला। तेरे ऊपर ताज़ा पकी-पकी खजूरें टपक पड़ेंगी। अतः तू खा और पी और आँखें ठंडी कर। फिर यदि तू किसी आदमी को देखे तो कहदेना, मैंने तो रहमान (करुणामय प्रभु) के लिए रोज़े की मन्नत मानी है। इसलिए मैं आज किसी मनुष्य से न बोलूँगी। (मरयम, 24-26)



जब वह अपनी क़ौम के पास वापस आयी, तो यह समय पवित्र मरयम के लिए बड़ा कठोर था। फिर वह उस बच्चे को लिए हुए अपनी क़ौम के लोगों के पास आई। वे बोले, ऐ मरयम, तू ने तो बड़ा ही आश्चर्य का काम कर डाला। ऐ हारून की बहन। न तो तेरा बाप ही कोई बुरा आदमी था और न तेरी माँ ही बदचलन थी। (मरयम, 27-28)

मरयम ने उन्हें कोई उत्तर नहीं दिया, बल्कि तब उसने उस (बच्चे) की ओर संकेत किया। (मरयम, 29)

वे इन्कार करते हुए यह कहा। वे कहने लगे, हम इससे कैसे बात करें जो पालने में पड़ा हुआ एक बच्चा है? उसने कहा, मैं अल्लाह का बन्दा हूँ। उसने मुझे किताब दी और मुझे नबी बनाया। और मुझे बरकतवाला किया जहाँ भी मैं रहूँ और मुझे नमाज़ और ज़कात की ताकीद की, जब तक कि मैं जीवित रहूँ। और अपनी माँ का हक़ अदा करनेवाला बनाया। और उसने मुझे सरकश और बेनसीब नहीं बनाया। सलाम है मुझपर जिस दिन कि मैं पैदा हुआ और जिस दिन कि मैं मरूँ और जिस दिन कि जीवित करके उठाया जाऊँ। (मरयम, 30-33)

लेकिन यहूद के एक संप्रदाय ने अनुसमर्थन किया और पवित्र मरयम पर बड़ा आरोप लगाया। और उनके इन्कार के कारण और मरयम के खिलाफ़ ऐसी बात कहने पर जो एक बड़ा लांछन था। (अन-निसा, 156)

वे पवित्र मरयम पर बलात्कार का आरोप लगाया लेकिन ईश्वर ने उनकी बेगुनाही साबित कर दी, उनके बारे में यह कहा। उसकी माँ अत्यन्त सत्यवती थी। (अल-माइदा, 75)

वह ईसा के ईश देवत्व और सन्देश पर विश्वास रखती थी और ईसा को सत्य मानती थी। ईश्वर

ने अपने रसूल ईसा और उनकी माँ पर अनुग्रह किया। जब अल्लाह कहेगा, ऐ मरयम के बेटे ईसा। मेरे उस अनुग्रह को याद करो जो तुमपर और तुम्हारी माँ पर हुआ है। जब मैंने पवित्र आत्मा से तुम्हें शक्ति प्रदान की, तुम पालने में भी लोगों से बात करते थे और बड़ी अवस्था को पहुँच कर भी। और याद करो जबकि मैंने तुम्हें किताब और हिकमत और तौरात और इंजील की शिक्ष दी थी। (अल-माइदा, 110)

ईश्वर चमत्कार और अपनी निशानियों से ईसा का समर्थन किया। और याद करो जब तुम मेरे आदेश से मिट्टी से पक्षी का प्रारूपण करते थे: फिर उसमें फूँक मारते थे तो वह मेरे आदेश से उड़नेवाली बन जाती थी। और तुम मेरे आदेश से अन्धे और कोढ़ी को अच्छा कर देते थे और जबकि तुम मेरे आदेश से मुर्दों को जीवित निकाल खड़ा करते थे। और याद करो जब कि मैंने तुमसे इसाईलियों को रोके रखा, जब कि तुम उनके पास खुली-खुली निशानियाँ लेकर पहुँचे थे, तो उनमें से जो इन्कार करनेवाले थे, उन्होंने कहा, यह तो बस खुला जादू है। और याद करो जब मैंने हवारियों (साथियों और शागिर्दों) के दिल में डाला कि मुझपर और मेरे रसूल पर ईमान लाओ, तो उन्होंने कहा, हम ईमान लाए और तुम गवाह रहो कि हम मुस्लिम (फ़रमाँबरदार) हैं। (अल-माइदा, 110-111)

फिर साथियों ने ईसा को अपने ईश्वर से यह प्रार्थना करने को कहा कि वह आसमान से उनके लिए खाने से भरा थाल उतारे। और याद करो जब हवारियों ने कहा, ऐ मरयम के बेटे ईसा। क्या तुम्हारा रब आकाश से खाने से भरा थाल हमपर उतार सकता है? (अल-माइदा, 112)

ईसा को अपने क़ौम के कृतघ्न करने के कारण उन पर ईश्वर के दण्ड का डर हुआ। कहा, अल्लाह से डरो, यदि तुम ईमानवाले हो।

वे बोले, हम चाहते हैं कि उसमें से खाएँ और हमारे हृदय संतुष्ट हों और हमें मालूम हो जाए कि तुमने हमसे सच कहा और हम उस पर गवाह रहें। (अल-माइदा, 112-113)

ईसा ने अपने रब से प्रार्थना की। मरयम के बेटे ईसा ने कहा, ऐ अल्लाह, हमारे रब। हमपर आकाश से खाने से भरा थाल उतार, जो हमारे लिए और हमारे अगलों और हमारे पिछलों के लिए खुशी का कारण बने और तेरी ओर से एक निशानी हो, और हमें आहार प्रदान कर, और तू सब से अच्छा राज़िक है। अल्लाह ने कहा, मैं उसे तुमपर उतारूँगा, फिर उसके बाद तुममें से जो कोई इन्कार करेगा तो मैं अवश्य उसे ऐसी यातना दूँगा जो संपूर्ण संसार में किसी को न दी होगी। (अल-माइदा, 114-115)

वे ईश्वर की ओर से आयी हुई कुछ चीज़ों का तिरस्कार किया।

जहाँ तक बनी इस्राईल के यहूद का संबंध है जो ईश्वर के नबी ईसा को झुठलाया, वे अपने इन्कार और हठ धर्मी पर ईसा के दुबारा आने तक बाक़ी रहेगी। और वे गुप्त चाल चले तो अल्लाह ने भी उसका तोड़ किया, और अल्लाह उत्तम तोड़ करनेवाला है। (आले-इमरान, 54)

ईसा को उनके रब ने यहूदियों की चाल से और ईश्वर द्वारा अपने शत्रुओं से सुरक्षित रहने का रास्ता बताया। जब अल्लाह ने कहा, ऐ ईसा। मैं तुझे अपने कब्ज़े में ले लूँगा और तुझे अपनी ओर उठा लूँगा और अविश्वासियों (की कुचेष्टाओं) से तुझे पार करदूँगा। और तेरे अनुपासियों को क्रियामत के दिन तक उन लोगों

नबी ईसा ने बैबिल में कहा कि ईश्वर एक है

आपके पास एक लेखक आया, जो लोगों को झगड़ा करते हुए सुन चुका था, और उसने यह देखा था कि आपने उनको सही जवाब दिया था, इस ने आप से पूछा कैसा सलाह सब से ज्यादा अच्छी है, तो यूसू ने कहा सब से अच्छी सलाह यह है सुन ऐ इसाइल हमारा भगवान एक ईश्वर है, परन्तु आप अपने ईश्वर से अपने पन, अपनी जान अपने विचार और अपनी शक्ति से प्रेम करो, यही सबसे अच्छी सलाह है (मुरखुस 12/28-35)

के ऊपर रखूँगा जिन्होंने इन्कार किया। फिर मेरी ओर तुम्हें लौटना है। फिर मैं तुम्हारे बीच उन चीज़ों का फैसला करदूँगा जिनके विषय में तुम विभेद करते रहे हो। (आले-इमरान, 55)

जब वे वादे तोड़ते रहे, चाल चलने, इन्कार करने, ईश्वर के रसूलों की हत्या करने और पवित्र मरयम पर बलात्कार का आरोप लगाने का सदा प्रयास करते रहे, तो ईश्वर ने कहा फिर उनके अपने वचन भंग करने और अल्लाह की आयतों का इन्कार करने के कारण और नबियों को नाहक क़त्ल करने के दरपे होने और उनके यह कहने के कारण कि हमारे हृदय आवरणों में सुरक्षित हैं - नहीं बल्कि वास्तव में उनके इन्कार के कारण अल्लाह ने उनके दिलों पर ठप्पा लगा दिया है। तो ये ईमान थोड़े ही लाते हैं। और उनके इन्कार के कारण और मरयम के खिलाफ ऐसी बात कहने पर जो एक बड़ा लांछन था और उनके इस कथन के कारण कि हमने मरयम के बेटे ईसा मसीह, अल्लाह के रसूल, को क़त्ल कर डाला। (अल-निसा, 155-157)

लेकिन ईश्वर ने ईसा को उनके दुश्मनों से मुक्ति दी। हालाँकि न तो इन्होंने उसे क़त्ल किया और न उसे सूली पर चढ़ाया। (अन-निसा, 157)

बल्कि वे ईसा के समान एक दूसरे व्यक्ति की हत्या कर दिये। बल्कि मामला उनके लिए संदिग्ध हो गया। और जो लोग इसमें विभेद कर रहे हैं, निश्चय ही वे इस मामले में संदेह में पड़े हुए थे। अटकल पर चलने के अतिरिक्त उनके पास कोई ज्ञान न था। निश्चय ही उन्होंने उसे (ईसा को) क़त्ल नहीं किया, बल्कि उसे अल्लाह ने अपनी ओर उठालिया। और अल्लाह अत्यंत प्रभुत्वशाली, तत्त्वदर्शी है। (अन-निसा, 157-158)

ईश्वर ने अपने रसूल ईसा को सुरक्षित रखा और उन्हें अपने पास बुला लिया।

किताब वालों में से कोई ऐसा न होगा, जो उसकी मृत्यु से पहले उसपर ईमान न ले आए। और वह क्रियामत के दिन उन पर गवाह होगा। (अन-निसा, 159)



नबी ईसा इस्लाम की नज़र में

जब मैं इस्लाम को पढ़ा, तो ईसामसीह का एक नया रूप मेरे सामने आया, जिसका मेरे मन पर बहुत गहरा असर हुआ

फरद्रेक दुलामार्क
जोहान्सबर्ग का प्रधान पादरी

ईसा इब्ने मरियम की यही सत्य कहानी है। सच्ची और पक्की बात की दृष्टि से यह है मरियम का बेटा ईसा, जिसके विषय में वे संदेह में पड़े हुए हैं। अल्लाह ऐसा नहीं कि वह किसी को अपना बेटा बनाए। महान और उच्च है वह। जब वह किसी चीज़ का फैसला करता है तो बस उसे कह देता है, “हो जा” । तो वह हो जाती है। (मरयम, 34-35)

ईश्वर ने यह वर्णन किया कि उसको औलाद का होना शोभा नहीं देता क्योंकि हर चीज़ का प्रजापति मालिक वही है, हर चीज़ उसी पर आधारित है और उसीकी मोहताज़ है, आकाश और धरती में जो कुछ है सब उसी के आदेश का पालन करते हैं, वह उनका ईश्वर है, उसके अतिरिक्त न कोई ईश्वर है और न दूसरा प्रभु ।

बैबिल फाँसी का इंकार करती है और आकाश पर उठाये जाने की पुष्टि करती हैं

लोगों ने उनको मारने के लिए पत्थर उठाये, लेकिन यस् छुप गये थे और उनके बीच ही संरचना से निकल गये थे, और इसी प्रकार से वह चले गये (युहन्ना 8.59) लोगों ने उनको पकड़ना भी चाहा परन्तु वह उनके हाथों से निकल गये (युहन्ना 10.93) और यह सब इसलिए हुआ ताकि पवित्र पुस्तक में लिखी हुयी बात पूरी हो उनकी कोई हड्डी किसी तरह नहीं टूटेगी (युहन्ना 36.19) यह यस् वही है जिनको तुम्हारे बीच से आकाश पर उठा लिया गया (सफर आमाल ए रसूल 1.11)



5. मुहम्मद सल्लेल्लाहु अलैहि वसल्लम

नबी मुहम्मद नबी और रसूलों के अन्तिम कडी है। बनी इस्राईल के रसूलों के अंत में आनेवाले ईसा ने आपके बारे में उपदेश दिया है। ईश्वर ने कहा । और याद करो जबकि मरयम के बेटे ईसा ने कहा, ऐ इस्राईल की सन्तान। मैं तुम्हारी ओर भेजा हुआ अल्लाह का रसूल हूँ। मैं तौरात की (उस भविष्यवाणी की) पुष्टि करता हूँ जो पहले से मौजूद है और एक रसूल की शुभ सूचना देता हूँ जो मेरे बाद आएगा, उसका नाम अहमद होगा। किन्तु वह जब उनके पास स्पष्ट प्रमाणों के साथ आया तो उन्होंने कहा, यह तो खुला जादू है। (अस-सफ़, 6)

तौरात और बाईबल में मुहम्मद के बारे में उपदेश है। ईश्वर ने कहा । (तो आज इस दयालुता के अधिकारी वे लोग हैं) जो उस रसूल, उम्मी नबी, का अनुसरण करते हैं जिसे वे अपने यहाँ तौरात और इन्ज़ील में लिखा पाते हैं। और जो उन्हें भलाई का हुक्म देता और बुराई से उन्हें रोकता है, उनके लिए अच्छी-स्वच्छ चीज़ों को हलाल और बुरी-अस्वच्छ चीज़ों को उनके लिए हाराम ठहराता है और उनपर से उनके वे बोझ उतारता है, जो अब तक उनपर लदे हुए थे और उन बन्धनों को खोलता है जिनमें वे जकड़े हुए थे। अतः जो लोग उसपर ईमान लाए, उसका सम्मान किया और उसकी सहायता की और उस प्रकाश का अनुसरण किया जो उसके साथ अवतरित हुआ है, वही सफलता प्राप्त करनेवाले हैं। (अल-आराफ़, 157)

बल्कि ईश्वर ने सारे नबियों से यह वचन लिया कि वे मुहम्मद पर ईमान लायें, और अगर उनके जीवन में ही मुहम्मद आजाये तो वे उनकी सहायता करें, अपनी-अपनी क़ौम को इस बारे में बतलायें, ताकि सारी क़ौमों में यह बात फैल जाये। ईश्वर ने कहा और याद करो जब अल्लाह ने नबियों के संबन्ध में वचन लिया कि मैंने



तुम्हें जो कुछ किताब और हिक्मत प्रदान की, इसके पश्चात् तुम्हारे पास कोई रसूल उसकी पुष्टि करता हुआ आए जो तुम्हारे पास मौजूद है, तो तुम अवश्य उसपर ईमान लाओगे और निश्चय ही उसकी सहायता करोगे। कहा क्या तुमने इकरार किया ? और इसपर मेरी ओर से डाली हुई ज़िम्मेदारी का बोझ उठाया ? उन्होंने कहा, हमने इकरार किया । कहा, अच्छा तो गवाह रहो और मैं भी तुम्हारे साथ गवाह हूँ। (अले-इमरान, 81)

पवित्र खुरआन ने इन उपदेशों का संकेत किया और इनको मुहम्मद की सत्यता का सबूत बनाया। ईश्वर ने कहा। जिन लोगों ने इन्कार की नीति अपनाई वे कहते हैं, तुम कोई रसूल नहीं हो। कह दो, मेरे और तुम्हारे बीच अल्लाह की और जिस किसी के पास किताब का ज्ञान है उसकी गवाही काफ़ी है। (अल-रअद, 43)

ईश्वर ने कहा । और निस्संदेह यह पिछले लोगों कि किताबों में भी मौजूद है। क्या यह उनके लिए कोई निशानी नहीं है कि इसे बनी-



इसाईल के विद्वान जानते हैं (अल-शुअरा, 196-197)

ईश्वर ने किताब वालों की स्थिति बताते हुए (जो अपनी औलाद की तरह मुहम्मद को जानने के कारण सब से पहले उन पर ईमान लाना चाहिए था) यह कहा । जिन लोगों को हमने किताब दी है वे उसे पहचानते हैं, जैसे अपने बेटों को पहचानते हैं और उनमें से कुछ सत्य को जान-बूझकर छिपा रहे हैं। (अल-बकरा, 146)

ईश्वर ने कहा और जब उनके पास अल्लाह की ओर से एक रसूल आया, जिससे उस (भविष्यवाणी) की पुष्टि हो रही है जो उनके पास थी, तो उनके एक गिरोह ने, जिन्हें किताब मिली थी, अल्लाह की किताब को अपने पीठ पीछे डाल दिया, मानों वे कुछ जानते ही नहीं । (अल-बकरा, 101)

मुहम्मद की ईश देवत्व पर सारे उपदेश लागू होते हैं। वही वह रसूल है ईश्वर ने जिनके आने की सूचना दी। लेकिन कुछ लोग जानते हुए भी इस सत्य को छुपाते हैं, और अपनी पवित्र पुस्तकों में लिखित बातों को पीठ पीछी डालते हैं इस प्रकार से कि वे जानते ही नहीं ।

मुहम्मद ईश्वर के एकीकरण का संदेश लेकर आये जिसका कोई साझी नहीं है जिस प्रकार से कि सारे नबी और रसूल आये

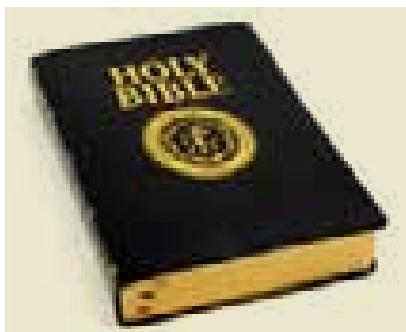
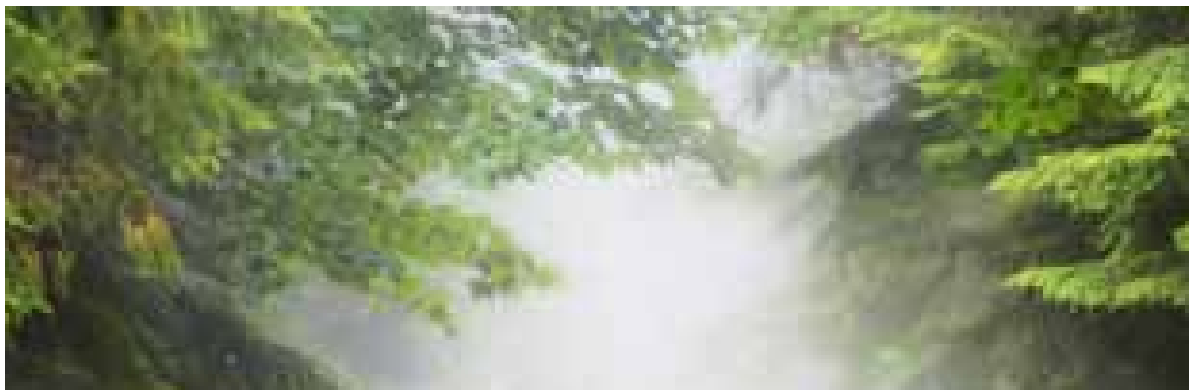
थे। ईश्वर ने कहा । हमने तुमसे पहले जो रसूल भी भेजा उसकी ओर यही प्रकाशना की, मेरे सिवा कोई पूज्य-प्रभु नहीं। अतः तुम मेरी ही बन्दगी करो। (अल-अंबिया, 25)

इसी प्रकार से मुहम्मद को सारे नबी और रसूलों के बीच कोई अंतर किये बिना उनपर विश्वास करनेवाला बना कर भेजा गया । हम उनमें से किसी के बीच अंतर नहीं करते । (अल-बकरा, 136)

बल्कि जो व्यक्ति मुहम्मद पर विश्वास रखता हो और खुरआन में मौजूद किसी नबी व रसूल पर विश्वास न रखता हो, तो वह मुहम्मद पर भी विश्वास रखने वाला नहीं है । उसने तुम्हारे लिए वही धर्म निर्धारित किया जिसकी ताकीद उसने नूह को की थी । और वह (जीवन्द आदेश) जिसकी प्रकाशना हमने तुम्हारी ओर की है और वह जिसकी ताकीद हमने इब्राहीम और मूसा और ईसा को की थी, यह है कि धर्म को कायम करो और उसके विषय में अलग-अलग न हो जाओ । (अल-शूरा, 13)

मुहम्मद ने इस बात की पुष्टि की है कि वह ईश्वर का बन्दा है । कह दो, मैं तो केवल तुम्हीं जैसा एक मनुष्य हूँ। मेरी ओर प्रकाशना की जाती है कि तुम्हारा पूज्य-प्रभु बस अकेला पूज्य-प्रभु है। अतः जो कोई अपने रब से मिलन की आशा रखता हो उसे चाहिए कि अच्छा कर्म करे और अपने रब की बन्दगी में किसी को साझी न बनाए। (अल-कहफ़, 110)

मुहम्मद अज्ञानी थे। लिखना-पढ़ना नहीं जानते थे जैसा कि पिछली पवित्र किताबों में यह बात लिखी जा चुकी है, ताकि किताब वाले अपनी किताबों में लिखित गुणों से मुहम्मद को पहचान



मुहम्मद अंतिम रसूल है

इसलिए कि बहुत जल्द ईश्वर मुझे इस पृथ्वी से उठा लेगा, और द्रोही का दृश्य बदल देगा, यहाँ तक कि वह हर विषय में मुझे ही गुमान करने लगेगा, इसके बावजूद जब वह बहुत बुरी मौत मरेगा तो मैं इसी कलंक में लंबे समय तक संसार में रहूँगा, लेकिन जब ईश्वर के महान रसूल मुहम्मद आयेंगे, तो वह मुझ से यह कलंक दूर करेंगे।

बैबिल बरनाबा



मुस्लिमों (आज्ञाकारियों) के लिए मार्गदर्शन, दयालुता और शुभ-सूचना के रूप में। (अल-नहल, 89)

लें, जैसा कि ईश्वर ने कहा । (तो आज इस दयालुता के अधिकारी वे लोग हैं) जो उस रसूल, उम्मी नबी, का अनुसरण करते हैं जिसे वे अपने यहाँ तौरात और इन्ज़ील में लिखा पाते हैं। और जो उन्हें भलाई का हुक्म देता और बुराई से उन्हें रोकता है, उनके लिए अच्छी-स्वच्छ चीज़ों को हलाल और बुरी-अस्वच्छ चीज़ों को उनके लिए हARAM ठहराता है और उनपर से उनके वे बोझ उतारता है जो अब तक उनपर लदे हुए थे और उन बन्धनों को खोलता है जिनमें वे जकड़े हुए थे। अतः जो लोग उसपर ईमान लाए, उसका सम्मान किया और उसकी सहायता की और उस प्रकाश का अनुसरण किया जो उसके साथ अवतरित हुआ है, वही सफलता प्राप्त करनेवाले हैं। (अल-आराफ़, 157)

पिछले रसूलों के समान ईश्वर ने मुहम्मद के द्वारा भी बहुत से चमत्कार दिखाये। आप का सबसे बड़ा चमत्कार पवित्र खुरआन है, जिसमें अगले-पिछले लोगों के बारे में सूचना है। जो दया, मार्गदर्शनी और शुभ-सूचनाओं को शामिल है । हमने तुम पर किताब अवतरित की हर चीज़ को खोलकर बयान करने के लिए और

जो विश्वास रखने वालों के लिए दूरदर्शिता का कारण है। यह लोगों के लिए सूझ के प्रकाशों का पूंज है, और मार्गदर्शन और दयालुता है उन लोगों के लिए जो विश्वास करें। (आल-जासिया, 20)

अनपढ़ नबी ने खुरआन द्वारा लोगों को उनके सारे विभेद दूर किया। हमने यह किताब तुमपर इसी लिए अवतरित की है कि जिसमें वे विभेद कर रहे हैं उसे तुम उनपर स्पष्ट कर दो। (अल-नहल, 64)

हालांकि खुरैश मुहम्मद की सत्यता और अमानतदारी का ज्ञान रखते थे। आप को सत्य और अमानतदार समझते थे, मगर फिर भी वे आपका तिरस्कार करते थे। तो ईश्वर ने उन्हें सारी मानवता, बल्कि सारे जिनों के साथ इकट्ठा होकर खुरआन जैसे वाणी को लाने की चुनौती दी। कह दो, यदि मनुष्य और जिन्न इसके लिए इकट्ठे हो जाएँ कि इस खुरआन जैसी कोई चीज़ लाएँ तो वे इस जैसी कोई चीज़ न ला सकेंगे, चाहे वे आपस में एक-दूसरे के सहायक ही क्यों न हों। (बनी इस्राईल, 88)

फिर भी वे झुठलाये, और हालांकि वे भाषा निपुण थे फिर भी वे खुरआन जैसी वाणी ला न सके। तो ईश्वर ने किसी के साथ भी इकट्ठा होकर खुरआन जैसी दस सूरतें लाने की चुनौती दिया। (उन्हें कोई शंका है) या वे कहते हैं कि उसने इसे स्वयं गढ़ लिया है? कह दो अच्छा, यदि तुम सच्चे हो तो इस जैसी गढ़ी हुई दस सूरतें ले आओ और अल्लाह से हटकर जिस किसी को बुला सकते हो, बुला लो। (हूद, 13)

फिर भी वे ला न सके। तो ईश्वर ने उन्हें खुरआन के समान एक सूरा लाने की चुनौती दी। और अगर उसके विषय में, जो हमने अपने बन्दे पर उतारा है, तुम किसी सन्देह में हो तो उस जैसी कोई सूरा ले आओ। (अल-बकरा, 23)



बैबल मुहम्मद की शुभ सूचना देता है

और यही बात शेष रहेगी, यहाँ तक कि अल्लाह के रसूल मुहम्मद प्रवेश करेंगे, जब मुहम्मद आँयेंगे अल्लाह के कानून पर विश्वास रखनेवालों से यह रहस्य खोल देंगे। और इशइय्या में लिखा है ऐ मुहम्मद, ऐ ईश्वर के महान चरित्रवान मैंने तेरा नाम मुहम्मद रखा है तेरा नाम अचयनित है। और हबखूख में लिखा है कि ईश्वर तैमान से और महान चरित्रवान फारान की पहाड़ियों से आया है। मुहम्मद की रौनक से आकाश रौशन हुआ है और उनकी प्रशंसा से पृथ्वी भँर गयी है। इसी प्रकार से इशइय्या में लिखा है कि मैंने जो उसको दिया है वह किसी और को नहीं दूँगा। अहमद ईश्वर की ऐसी प्रशंसा करेंगे जो सब से अच्छे पृथ्वी के स्थान से आयेगी, जिससे सारे जीव खुश होंगे, हर सम्मान के लिए उनको एक मानेंगे, और हर नीच चीज़ों से उनको बड़ा समझेंगे।

बैबिल बरनाबा

फिर भी वे ला न सके। हालांकि वे भाषा निपुण थे।

“खुरैश” के काफिर सदा आपको झुठलाते रहे, तो ईश्वर ने पिछले संकल्पवान नबी और रसूल इब्राहीम, नूह, मूसा और ईसा के प्रकार आपको भी धैर्य से काम लेने का आदेश दिया। अतः धैर्य से काम लो जिस प्रकार संकल्पवान रसूलों ने धैर्य से काम लिया। (अल-अहक़ाफ़, 35)

परन्तु आपने धैर्य से काम लिया। उनकी मार्गदर्शनी करते रहे। उन्हें अपनी बातों और चरित्र से ज्ञान देते रहे तो ईश्वर ने आपकी सुरक्षा की।

ऐ नबी। तुम्हारे लिए अल्लाह और तुम्हारे ईमानवाले अनुयायी ही काफ़ी है। (अल-अनफ़ाल, 64) क्या अल्लाह अपने बन्दे के लिए काफ़ी नहीं है। (अल-जुमर, 36)

ईश्वर ने पिछले नबी और रसूलों के प्रकार आपको भी खुरैश के विरोध में विजेता बनाया। अल्लाह ने लिख दिया है, मैं और मेरे रसूल ही विजयी होकर रहेंगे। निस्संदेह अल्लाह शक्तिमान, प्रभुत्वशाली है। (अल-मुजादला, 21)

ईश्वर ने कहा और हमारे अपने उन बन्दों के हक में, जो रसूल बनाकर भेजे गए, हमारी बात पहले ही निश्चित हो चुकी है कि निश्चय ही उन्हीं की सहायता की जाएगी। (अल-साफ़ात, 173) निश्चय ही हम अपने रसूलों की और उन लोगों की जो ईमान लाए, अवश्य सहायता करते हैं, सांसारिक जीवन में भी और उस दिन भी जबकि गवाह खड़े होंगे। (शाफ़िर, 51)

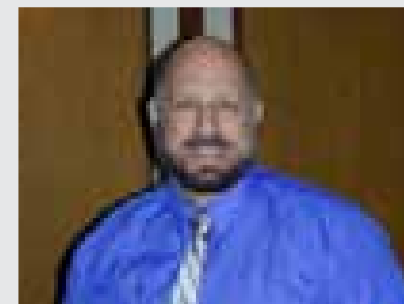
वे आपके संदेश को रोकना चाहे और आपके प्राकश को बुझाना चाहे, फिर भी ईश्वर ने अपने प्राकश को पूर्ण किया। वे चाहते हैं कि अल्लाह के प्राकश को अपने



सब से अच्छे आदर्श

मैंने इतिहास में इस मनुष्य के लिए अच्छे आदर्श की खोज किया, तो मैं ने वह आदर्शवान नबी मुहम्मद को पाया

जोताह
जर्मनी कवि



आप प्रश्न करो और खुरआन आपको उत्तर देगा

मैं ने खुरआन पढ़ा तो इसमें मैंने जीवन के सारे प्रश्नों का उत्तर पाया

मैकलहाट
अमेरिकन लेखक



और लोगों के लिए अहमद

ईसाइयों की ओर से यह वाक्यांश मशहूर है कि आसमानों में महिमा ईश्वर के लिए, पृथ्वी में शांति और लोगों के लिए खुशी है यह वाक्यांश इस तरह नहीं था, बल्कि इस तरह था कि आसमानों में महिमा अल्लाह के लिए ज़मीन पर इस्लाम और लोगों के लिए अहमद है

डेविड बिनजमिन कुलदानी
मूसल शहर का पूर्व पादरी

मुँह की फूँक से बुझा दें, किन्तु अल्लाह अपने प्रकाश को पूर्ण करके ही रहेगा, यद्यपि इन्कार करनेवालों को अप्रिय ही लगे। वही है जिसने अपने रसूल को मार्गदर्शनी और सत्यधर्म के साथ भेजा, ताकि उसे पूरे के पूरे धर्म पर प्रभुत्व प्रदान कर दे, यद्यपि बहुदेववादियों को अप्रिय ही लगे (अल-सफ़फ, 8-9)

परन्तु ईश्वर ने अपनी अनुग्रह को पूर्ण किया। इस्लाम को प्रभुत्व प्रदान किया। सारे धर्मों में ईश्वर के एकीकरण की पुष्टी की और इस संदेश और धर्म के द्वारा सारी मानवता पर अपनी अनुग्रह पूर्ण किया। आज मैंने तुम्हारे लिए तुम्हारे धर्म को पूर्ण कर दिया और तुमपर अपनी नेमत पूरी कर दी और मैंने तुम्हारे लिए धर्म के रूप में इस्लाम को पसन्द किया। (अल-माइदा, 3)

बल्कि धर्म की रक्षा की और इस संदेश को क्रियामत तक बाक़ी रखा। यह नसीहत निश्चय ही हमने अवतरित की है और हम स्वयं इसके रक्षक हैं। (अल-हिज़्र, 9)

यही संदेश सारे देवत्व संदेशों के अंत में आनेवाला संदेश है। मुहम्मद तुम्हारे पुरुषों में से किसी के बाप नहीं हैं, बल्कि वे अल्लाह के रसूल और नबियों के समापक (अन्तिम नबी) हैं। अल्लाह को हर चीज़ का पूरा ज्ञान है। (अल-अहज़ाब, 40)

ईश्वर की ओर से धरती और उसपर रहनेवालों के जीवित होने तक यही संदेश बाक़ी रहनेवाला है। तो ईश्वर की सुरक्षा से क्रियामत तक बाक़ी रहनेवाला वह संदेश क्या है ?

चमत्कारी खुरआन

खुरआन एक करीम सौंच विचार पर प्रभावित होता है, और दिलों की गहरायियों पर असर करता है। और अवश्य रूप से खुरआन मुहम्मद की ईमानदारी का सबूत के रूप में उतरा है।

हेनरी डी कास्ट्री
फ्रांसीसी सेना का पूर्व कर्नल

